मचित्तवग्गणसरूवेण परिणामविरोहादो। ण च सचित्तवग्गणाए कम्म-णोकम्मक्खंधेसु तत्तो विष्फट्टिय सांतरणिरंतरवग्गणाणमायारेण परिणदेसु तब्भेदेणेवेदिस्से समुप्पत्ती; तत्तो विष्फट्टसमए चेव तेहिंतो पुधभूदक्खंधाणं सचित्तवग्गणभावविरोहादो। ण महाखंधभेदेणेदिस्से समुप्पत्ती; महाखंधादो विष्फट्टखंधाणं महाखंधभेदेहिंतो पुधभूदाणं महाखंधववएसाभावेण तेसिं तब्भेदत्ताणुववत्तीदो। एदम्मि णए अवलंबिज्जमाणे उवरिल्लीणं वग्गणाणं भेदेण वि होदि त्ति परूविदं। दव्वट्ठियणए पुण अवलंबिज्जमाणे उवरिल्लीणं भेदेण वि होदि। धुवक्खंधादीणं संघादेण सांतर✠णिरंतरवग्गणा ण होदि; दव्वट्ठियणयावलंबणादो। सांतरणिरंतरवग्गणा एक्का चेव; तिस्से आयारेण धुवक्खंधवग्गणादीणमणंतरं चेव परिणामाभावादो। पज्जवट्ठियणए पुण अवलंबिज्जमाणे हेट्ठिल्लीणं संघादेण वि होदि; उक्कस्सधुवक्खंधवग्गणाए एगादिपरमाणुसमागमे सांतरणिरंतरवग्गणाए समुप्पत्तिं पडि विरोहाभावादो। ण विवरीयकप्पणा; सचित्तवग्गणट्ठाणाणमणुप्पत्तिप्पसंगादो। सांतरणिरंतरवग्गणाए परिणामंतरावत्ती णत्थि त्ति ण वोत्तुं जुत्तं; धुवसुण्णवग्गणाणमाणंतियप्पसंगादो। ण सत्थाणे चेव परिणामो वि; जहण्णवग्गणादो परमाणुत्तरवग्गणाए उप्पत्तिविरोहादो सांतरणिरंतरवग्गणाए अभाव-

होती, क्योंकि, सचित्तवर्गणाओंका अचित्तवर्गणारूपसे परिणमन होनेमें विरोध है। यदि कहा जाय कि सचित्तवर्गणाके कर्म और नोकर्मस्कन्धोंके उससे अलग होकर सान्तरनिरन्तर वर्गणारूपसे परिणत होनेपर उनके भेदसे इस वर्गणाकी उत्पत्ति होती है सो यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, उनसे अलग होनेके समय ही उनसे अलग हुए स्कन्धोंको सचित्त वर्गणा होनेमें विरोध आता है। महास्कन्धके भेदसे इस वर्गणाकी उत्पत्ति होती है यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, महास्कन्धसे अलग हुए स्कन्ध यतः महास्कन्धके भेदसे अलग हुए हैं, अतः उनकी महास्कन्ध संज्ञा नहीं हो सकती और इसलिए उनका उससे भेद नहीं बन सकता। इस नयका अवलम्बन करने पर ऊपरकी वर्गणाओंके भेदसे यह वर्गणा नहीं होती है यह कहा गया है। परन्तु द्रव्यार्थिक नयका अवलम्बन करने पर ऊपरकी वर्गणाओंके भेदसे भी यह वर्गणा होती है। ध्रुवस्कन्ध आदिकके संघात से सान्तरनिरन्तर वर्गणा नहीं होती है, क्योंकि, यहां द्रव्यार्थिक नयका अवलम्बन लिया गया है। सान्तरनिरन्तर वर्गणा एक ही है, उस रूपसे ध्रुवस्कन्ध वर्गणा आदिका अनन्तर ही परिणामका अभाव है। परन्तु पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन लेने पर नीचेकी वर्गणाओंके संघातसे भी यह वर्गणा होती है, क्योंकि, उत्कृष्ट ध्रुवस्कन्धवर्गणामें एक आदि परमाणुका समागम होनेपर सान्तरनिरन्तर वर्गणाकी उत्पत्ति होनेमें कोई विरोध नहीं है। यह विपरीत कल्पना भी नहीं है, क्योंकि, ऐसा मानने पर सचित्तवर्गणास्थानोंकी अनुत्पत्तिका प्रसंग आता है। सान्तरनिरन्तरवर्गणाका दूसरे प्रकारसे परिणमन नहीं होता है यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, ऐसा होनेपर ध्रुवशून्यवर्गणाओंके अनन्त होनेका प्रसंग आता है। केवल स्वस्थानमें ही परिणमन होता है यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, जघन्य वर्गणासे एक परमाणुअधिक वर्गणाकी उत्पत्ति होनेमें विरोध आता है, दूसरे

✠ ता० आ० का० प्रतिषु '-क्खंधादीणं सांतर-' इति पाठः ।

प्पसंगादो च । तम्हा सत्थाणेण भेदसंघादेणेव होदि त्ति घेत्तव्वं । अथवा उवरिम-वग्गणाओ विप्फट्टाओ धुवखंदादिसरूवेणेव णिवदंति; साहावियादो । धुवखंदादि-हेट्ठिमवग्गणाओ सत्थाणे चेव समागमंति उवरिमवग्गणाहि वा; साहावियादो । सांतरणिरंतरवग्गणा पुण सत्थाणे चेव भेदेण संघादेण तदुभयेण वा परिणमदि त्ति जाणावणट्ठं भेदसंघादेणे त्ति परूविदं ।

उवरिल्लीणं दव्वाणं भेदेण हेट्ठिल्लीणं दव्वाणं संघादेण सत्थाणेण भेदसंघादेण ॥ १०८ ॥

केसु वि सुत्थपोत्थएसु✡ एसो पाठो✱ । एदस्स सुत्तस्स जहा धुवखंधवग्ग-णाए तिहि पयारेहि उप्पत्ती परूविदा तहा एत्थ वि परूवेदव्वा; विसेसाभावादो । कधं सचित्तवग्गणा महाखंधवग्गणा वा सांतरणिरंतरवग्गणसरूवेण परिणमइ? ण, तब्भेदेण आगदक्खंधाणं सांतरणिरंतरवग्गणायारेण परिणामुवलंभादो ।

सांतरणिरंतरदव्ववग्गणाणमुवरि पत्तेयसरीरदव्ववग्गणा णाम किं भेदेण किं संघादेण किं भेदसंघादेण ॥ १०९ ॥

सान्तरनिरन्तर वर्गणाका अभाव भी प्राप्त होता है, इसलिए स्वस्थानकी अपेक्षा भेद-संघातसे ही यह वर्गणा होती है ऐसा यहां ग्रहण करना चाहिए । अथवा ऊपरकी वर्गणायें टूट कर ध्रुवस्कन्ध आदि रूपसे ही उनका पतन होता है, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है । तथा ध्रुवस्कन्ध आदि नीचेकी वर्गणायें स्वस्थानमें ही समागमको प्राप्त होती हैं, अथवा ऊपरकी वर्गणाओंके साथ समागमको प्राप्त होती हैं, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है। परन्तु सान्तरनिरन्तरवर्गणा स्वस्थानमें ही भेदसे, संघातसे या तदुभयसे परिणमन करती है इस बातका ज्ञान करानेके लिए ' भेद-संघातसे ' ऐसा कहा है ।

ऊपरके द्रव्योंके भेदसे, नीचेके द्रव्योंके संघातसे और स्वस्थानकी अपेक्षा भेद-संघातसे होती है ॥ १०८ ॥

कितनी ही सूत्र पोथियोंमें यह पाठ है । इस सूत्रकी व्याख्या करते समय जिस प्रकार ध्रुवस्कन्ध वर्गणाकी तीन प्रकारसे उत्पत्ति कही है उसी प्रकार यहां भी कहनी चाहिए, क्योंकि, उससे इसमें कोई विशेषता नहीं है ।

शंका-सचित्तवर्गणा या महास्कन्धवर्गणा सान्तरनिरन्तर वर्गणारूपसे कैसे परिणमन करती है ?

समाधान-नहीं, क्योंकि, उनके भेद द्वारा आये हुए स्कन्धोंका सान्तरनिरन्तरवर्गणा-रूपसे परिणमन पाया जाता है ।

सान्तरनिरन्तरद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर प्रत्येकशरीरद्रव्यवर्गणा क्या भेदसे होती है, क्या संघातसे होती है या क्या भेद-संघातसे होती है ॥ १०९ ॥

✱ ता० प्रतौ ' सुत्तपोत्त (त्थ) एसु ' अ० आ० का० प्रतिषु 'सुत्तपोत्तएसु' इति पाठः ।

✡ अ- आ- प्रत्योः 'पादो' इति पाठः ।

सुगमं ।

सत्थाणेण भेदसंघादेण ॥ ११० ॥

परमाणुवग्गणमादिं कादूण जाव सांतरणिरंतरउक्कस्सवग्गणे त्ति ताव एदासिं वग्गणाणं समुदयसमागमेण पत्तेयसरीरवग्गणा ण समुप्पज्जदि ⊗ । कुदो ? उक्कस्सांतरणिरंतरवग्गणाण सरूवं मोत्तूण रूवाहियादिउवरिमवग्गणसरूवेण परिणमणसत्तीए अभावादो । आहार-तेजा-कम्मइयपरमाणुपोग्गल♠क्खंधेसु जोगकसायवसेण पत्तेय-वग्गणाए बंधमागदेसु अण्णापत्तेयसरीरवग्गणा उप्पज्जदि त्ति हेट्ठिल्लाणं दव्वाणं संघादेण पत्तेयसरीरवग्गणाए✱ उप्पत्ती किण्ण भण्णदे ? ण, पत्तेयसरीरवग्गणसमागमेण विणा हेट्ठिमवग्गणाणं चेव समुदयसमागमेण समुप्पज्जमाणपत्तेयसरीरवग्गणा-णुवलंभादो । किं च जोगवसेण एगबंधणबद्धओरालिय-तेजा-कम्मइयपरमाणुपोग्गल-क्खंधा अणंताणंत विस्सासुवचएहि उवचिदा । ण ते सव्वे सांतरणिरंतरादिहेट्ठिमवग्गणासु कत्थ वि सरिसधणिया होंति; पत्तेयवग्गणाए असंखेज्जदिभागत्तादो । ण ते पत्तेयसरीरजहण्णवग्गणाए सह सरिसा होंति; तदसंखे० भागत्तादो । ण ते पुध वग्गणासण्णं लहंति; जीवादो पुधभूदकाले तेसिमेगबंधाभावादो । तम्हा हेट्ठिल्लाणं दव्वाणं

यह सूत्र सुगम है ।

स्वस्थानकी अपेक्षा भेद-संघातसे होती है ॥ ११० ॥

परमाणुवर्गणासे लेकर सान्तरनिरन्तर उत्कृष्ट वर्गणा तक इन वर्गणाओंके समुदय-समागमसे प्रत्येकशरीरवर्गणा नहीं उत्पन्न होती है,क्योंकि, उत्कृष्ट सांतरनिरन्तरवर्गणाओंका अपने स्वरूपको छोड़कर एक अधिक आदि उपरिम वर्गणारूपसे परिणमन करनेकी शक्तिका अभाव है ।

शंका– आहारद्रव्यवर्गणा, तैजसशरीरद्रव्यवर्गणा और कार्मणशरीरद्रव्यवर्गणाके पुद्गल-स्कन्धोंके योग और कषायके वशसे प्रत्येकवर्गणारूपसे बन्धको प्राप्त होनेपर उनसे अन्य प्रत्येक शरीरवर्गणाकी उत्पत्ति होती है, अतः नीचेके द्रव्योंके संघातसे प्रत्येक शरीरवर्गणाकी उत्पत्ति क्यों नहीं कही जातीं ?

समाधान– नहीं, क्योंकि प्रत्येकशरीरवर्गणाके समागमके बिना केवल नीचेकी वर्गणाओंके समुदयसमागमसे उत्पन्न होनेवाली प्रत्येकरीरवर्गणायें नहीं उपलब्ध होती । दूसरे, योगके वशसे एकबन्धनबद्ध औदारिक, तैजस और कार्मण परमाणु पुद्गलस्कन्ध अनन्तानन्त विस्रसोप-चयोंसे उपचित होते हैं । परन्तु वे सब सान्तरनिरन्तर आदि नीचेकी वर्गणाओंमें कही भी सदृशधनवाले नहीं होते, क्योंकि, वे प्रत्येकवर्गणाके असख्यातवें भागप्रमाण होते हैं । वे प्रत्येक-शरीर जघन्य वर्गणाके सदृश भी नहीं होते, क्योंकि, वे उसके असंख्यातवें भागप्रमाण होते हैं । वे अलग रूपसे वर्गणासंज्ञाको भी नहीं प्राप्त होते, क्योंकि, जीवसे अलग होनेके कालमें उनका

⊗ ता० प्रतौ ' ण (स–) मुप्पज्जदि' अ० आ० का० प्रतिषु 'ण मुप्पज्जदि' इति पाठः । ♠ ता० प्रतौ '-कम्मइयपोग्गल' इति पाठः । ✱ म० प्रतिपाठोऽयम् । प्रतिषु 'बंधमागदेसु अण्णपत्तेयसरीरवग्गणाए' इति पाठः ।

संघादेण ण पत्तेयसरीरवग्गणा उप्पज्जदि त्ति सिद्धं। उवरिल्लीणं दव्वाणं भेदेण विणा✿ पत्तेयसरीरवग्गणा उप्पज्जदि, बादर-सुहुमणिगोदवग्गणाणमोरालिय-तेजा-कम्मइयवग्गणक्खंधेसु अधट्ठिदिगलणाए गलिदेसु पत्तेयसरीरवग्गणं वोलेदूण हेट्ठा सांतरणिरंतरादिवग्गणसरूवेण सरिसधणियभावेण अवट्ठाणुवलंभादो। कथमेदं णव्वदे? सत्थाणेण भेदसंघादेणेव पत्तेयसरीरवग्गणा होदि त्ति सुत्तण्णहाणुववत्तीदो! भेदं गदविदियसमए पत्तेयवग्गणसरूवेण तेसिं परिणामो अत्थि त्ति उवरिल्लीण दव्वाणं भेदेण पत्तेयसरीरवग्गणाए उप्पत्ती किण्ण वुच्चदे? ण, उवरिमवग्गणादो आगदपरमाणुपोग्गलेहि चेव पत्तेयसरीरवग्गणणिप्पत्तीए अभावादो। बादर-सुहुमणिगोदवग्गणाहिंतो एगजीवपत्तेयसरीरेसुप्पण्णे संते उवरिल्लीणं दव्वाणं भेदेण पत्तेयसरीरदव्ववग्गणाए उप्पत्ती किण्ण वुच्चदे? ण, उवरिल्लीणं वग्गणाणं भेदो णाम विणासो। ण च बादर-सुहुमणिगोदवग्गणाणं मज्झे एया वग्गणा णट्ठा संती पत्तेयसरीरवग्गणासरूवेण परिणमदि; पत्तेयवग्गणाए आणंतियप्पसंगादो। ण च असंखेज्जलोगमेत्तजीवेहि एगा बादरणिगोदवग्गणा सुहुमणिगोदवग्गणा वा णिप्पज्जदि; तव्वग्गणाणमाणंतियत्तप्पसंगादो विप्फट्टेगजीवस्स बादर-सुहुमणिगोदवग्गणाणमणं-

एक बन्धन नहीं होता। इसलिए नीचेकी वर्गणाओंके संघातसे प्रत्येकशरीरवर्गणा नहीं उत्पन्न होती है यह सिद्ध हुआ।

ऊपरके द्रव्योंके भेदके बिना प्रत्येकशरीरवर्गणा उत्पन्न होती है, क्योंकि, बादरनिगोदवर्गणा और सूक्ष्मनिगोदवर्गणाके औदारिक, तैजस और कार्मणवर्गणास्कन्धोंके अधःस्थितिगलनाके द्वारा गलित होने पर प्रत्येकशरीरवर्गणाको उल्लघन कर उनका नीचे सदृशधनरूप सान्तरनिरन्तर आदि वर्गणारूपसे अवस्थान उपलब्ध होता है।

शंका– यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान– स्वस्थानकी अपेक्षा भेद-संघातसे ही प्रत्येकशरीरवर्गणा होती है यह सूत्र अन्यथा बन नहीं सकता है, इससे जाना जाता है।

शंका–भेदको प्राप्त होनेके दूसरे समयमें प्रत्येकशरीरवर्गणारूपसे उनका परिणमन होता है, इसलिए उपरिम द्रव्योंके भेदसे प्रत्येकशरीरवर्गणाका उत्पत्ति क्यों नहीं कहते?

समाधान– नहीं, क्योंकि, उपरिम वर्गणासे आये हुए परमाणु पुद्गलोंसे ही प्रत्येकशरीरवर्गणाकी निष्पत्तिका अभाव है।

शंका– बादरनिगोदवर्गणासे और सूक्ष्मनिगोदवर्गणासे एक जीवके प्रत्येकशरीरवालोंमें उत्पन्न होने पर ऊपरके द्रव्योंके भेदसे प्रत्येकशरीरद्रव्यवर्गणाकी उत्पत्ति क्यों नहीं कहते?

समाधान– नहीं, क्योंकि, ऊपरकी वर्गणाओंके भेदका नाम ही विनाश है और बादरनिगोदवर्गणा तथा सूक्ष्मनिगोदवर्गणामेंसे एक वर्गणा नष्ट होती हुई प्रत्येकशरीरवर्गणारूपसे नहीं परिणमती, क्योंकि ऐसा होने पर प्रत्येकशरीरवर्गणाएँ अनन्त हो जाँयगी। यदि कहा जाय कि असंख्यात लोकप्रमाण जीवोंके द्वारा एक बादरनिगोदवर्गणा या सूक्ष्मनिगोदवर्गणा उत्पन्न होती है सो यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, इस प्रकार उन वर्गणाओंके अनन्त होनेका प्रसंग आता है। तथा अलग हुए एक जीवके बादरनिगोदवर्गणाके और सूक्ष्मनिगोद-

✿ आ० प्रतौ "भेदेण वि ण" इति पाठः।

तिमभागदव्वस्स तब्भेदत्ताणुववत्तीदो वा। ण च महाखंधवग्गणा णट्ठा संती पत्तेयस-रीरवग्गणसरूवेण परिणमदि; तिस्से सव्वकालं विणासाभावादो पत्तेयसरीरवग्गणाए आणंतियत्तप्पसंगादो णिच्चेयणस्स सचेयणभावेण परिणामविरोहादो वा। तदो पत्तेय-सरीरवग्गणा उवरिल्लीणं वग्गणाणं भेदेण संघादेण वा ण होदि त्ति सिद्धं। किंतु सत्थाणेण भेदसंघादेण होदि; पत्तेयवग्गणभेदाणं वग्गणाणं समुदयसमागमेण असमा-गमेण वा वग्गणुप्पत्तिदंसणादो।

पत्तेयसरीरवग्गणाए उवरि बादरणिगोददव्ववग्गणा णाम किं भेदेण किं संघादेण किं भेदसंघादेण ॥ १११ ॥

सुगमं।

सत्थाणेण भेदसंघादेण ॥ ११२ ॥

हेट्ठिल्लीणं ताव संघादेण बादरणिगोदवग्गणा ण होदि; णिच्चेयणाणं वग्गणाणं समुदयसमागमेण सचित्तवग्गणुप्पत्तिविरोहादो असंखेज्जलोगमेत्तपत्तेयसरीरवग्गणाणं समुदयसमागमेण अणंतजीवगब्भेगबादरणिगोदवग्गणाए उप्पत्तिविरोहादो। ण च उवरिमसचित्तवग्गणाए भेदेण होदि; एगसुहुमणिगोदवग्गणजीवाणमक्कमेण सव्वेसिं पि

वर्गणाके अनन्तवें भागप्रमाण द्रव्यका उस रूपसे भेद भी नहीं बन सकता है। यदि कहा जाय कि महास्कन्धवर्गणा नष्ट होती हुई प्रत्येकशरीरवर्गणारूपसे परिणमन करती है सो यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, एक तो उसका सर्वकाल विनाश नहीं होता, दूसरे ऐसा माननेपर प्रत्येक-शरीरवर्गणाके अनन्त होनेका प्रसंग आता है और तीसरे अचेतनका सचेतनरूपसे परिणमन होनेमें विरोध है, इसलिए प्रत्येकशरीरवर्गणा उपरिम वर्गणाओंके भेद या संघातसे नहीं उत्पन्न होती है यह सिद्ध हुआ। किन्तु स्वस्थानकी अपेक्षा भेद-संघातसे उत्पन्न होती है, क्योंकि, प्रत्येक वर्गणाके अवान्तर भेदरूप वर्गणाओंके समुदयसमागम या असमागमसे वर्गणाकी उत्पत्ति देखी जाती है।

प्रत्येकशरीरवर्गणाके ऊपर बादरनिगोदवर्गणा क्या भेदसे होती है, क्या संघा-तसे होती है या क्या भेद-संघातसे होती है ॥ १११ ॥

यह सूत्र सुगम है।

स्वस्थानकी अपेक्षा भेद-संघातसे होती है ॥ ११२ ॥

नीचेकी वर्गणाओंके संघातसे तो बादरनिगोदवर्गणा उत्पन्न होती नहीं, क्योंकि, अचेतन वर्गणाओंके समुदयसमागमसे सचेतन वर्गणाओंकी उत्पत्ति होनेमें विरोध है। तथा असंख्यात लोकप्रमाण प्रत्येकशरीरवर्गणाओंके समुदयसमागमसे अनन्तजीवगर्भ एक बादरनिगोदवर्गणाकी उत्पत्ति होनेमें विरोध है। यह कहना उपरिम सचित्तवर्गणाके भेदसे यह वर्गणा होती है, ठीक नहीं है, क्योंकि, एक सूक्ष्मनिगोदवर्गणाके सब जीवोंका युगपत् बादरनिगोदवर्गणारूपसे

बादरणिगोदवग्गणसरूवेण परिणामविरोहादो सुहुमणिगोदेहिंतो आगंतूण बादरणिगोदेसु उप्पण्णेहि चेव जीवेहि आरद्धबादरणिगोदवग्गणाए अभावादो वा । कुदो एदं णव्वदे? उवरिल्लीणं भेदेण णत्थि त्ति वयणादो । महाखंधदव्ववग्गणाए भेदेण बादरणिगोदवग्गणा ण उप्पज्जदि; तिस्से विणासाभावादो अचित्तस्स सचित्तभावेण परिणामविरोहादो च । सत्थाणेण भेदसंघादेणेव बादरणिगोदवग्गणा होदि । सुहुमणिगोदेहिंतो पत्तेयसरीरेहिंतो चेव आगदेहि✡ जीवेहि बादरणिगोदजीवेहि च एगेगा बादरणिगोदवग्गणा णिप्पज्जदि त्ति भणिदं होदि । बादरणिगोदेहिंतो जेण सुहुमणिगोदा असंखेज्जलोगगुणा तेण एगबादरणिगोदवग्गणा सुद्धेहि सुहुमणिगोदेहि चेव आरद्धे त्ति भणिदे को दोसो? ण, एगसुहुमणिगोदवग्गणट्ठियजीवाणमणंतिमभागाणं चेव बादरणिगोदेसु संचारुवलंभादो ।

बादरणिगोददव्ववग्गणाणमुवरि सुहुमणिगोददव्ववग्गणा णाम किं भेदेण किं संघादेण किं भेदसंघादेण ॥ ११३ ॥

सुगमं ।

परिणमन होनेमें विरोध है । तथा जो जीव सूक्ष्म निगोदोंमेंसे आकर बादरनिगोदोंमें उत्पन्न होते हैं उनके द्वारा आरम्भ की गई बादरनिगोदवर्गणाका अभाव है ।

शंका- यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान- उपरिम वर्गणाओंके भेदसे नहीं होती इस वचनसे जाना जाता है ।

महास्कन्धद्रव्यवर्गणाके भेदसे बादरनिगोदवर्गणा नहीं उत्पन्न होती है, क्योंकि, एक तो उसका विनाश नहीं होता। दूसरे अचित्तका सचित्तरूपसे परिणमन होनेमें विरोध है। इसलिए स्वस्थानकी अपेक्षा भेद-संघातसे ही बादरनिगोदवर्गणा होती है । सूक्ष्म निगोदमेंसे या प्रत्येक-शरीरमेंसे आये हुए जीवोंके द्वारा और बादर निगोद जीवोंके द्वारा एक एक बादरनिगोद-वर्गणा निष्पन्न की जाती है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

शंका- यत: बादरनिगोदोंसे सूक्ष्मनिगोद असंख्यात लोकगुणे हैं, अत: एक बादरनिगोद वर्गणा शुद्ध सूक्ष्म निगोदों से आरम्भ होती है यदि ऐसा कहा जाय तो क्या दोष है ?

समाधान- नहीं, क्योंकि, एक सूक्ष्मनिगोदवर्गणामें स्थित जीवोंके अनन्तवें भागमात्र जीवोंका ही बादर निगोदोंमें संचार देखा जाता है, अत: एक सूक्ष्मनिगोदवर्गणासे एक बादर-निगोदवर्गणाका आरम्भ नहीं हो सकता ।

बादरनिगोदद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर सूक्ष्मनिगोदद्रव्यवर्गणा क्या भेदसे होती है, क्या संघातसे होती है या क्या भेद-संघातसे होती है ॥ ११३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

✡ ता० का० प्रत्यो: ' च आगदेहि ' इति पाठ: ।

सत्थाणेण भेदसंघादेण ॥ ११४ ॥

ण बादरणिगोदवग्गणाणं संघादेण एगसुहुमणिगोदवग्गणा होदि; एगसुहुमणिगोदवग्गणजीवमेत्तबादरणिगोदजीवेहि चेव आरद्धसुहुमणिगोदवग्गणाभावादो✡। तं पि कुदो णव्वदे? हेट्ठिल्लीणं संघादेण ण उप्पज्जदि त्ति वयणादो। बादरणिगोदाणं सुहुमणिगोदभावविरोहादो वा बादरणिगोदेहि सुहुमणिगोदवग्गणा णारब्भदि। जदि सुहुमो ण बादरो अह बादरो ण सुहुमो त्ति तेण सुहुमणिगोदेहि चेव सुहुमणिगोददव्ववग्गणा आरब्भदि त्ति भणिदं होदि। ण च बादरणिगोदाणं पत्तेयसरीराणं वा सुहुमणिगोदेसेसुप्पण्णाणं बादरणिगोदत्तं पत्तेयसरीरत्तं वा अत्थि; विरुद्धपरिणामाणमक्कमेण वुत्तिविरोहादो। एसत्थो पहाणो पत्तेय-बादरणिगोदवग्गणासु वि वत्तव्वो। महाखंधभेदेण वि सुहुमणिगोदवग्गणा ण होदि; पुव्वुत्तदोसप्पसंगादो। किंतु भेदसंघादेण होदि। सुहुमणिगोदवियप्पवग्गणाणं भेदसंघादेण सुहुमणिगोदवग्गणा उप्पज्जदि त्ति भणिदं होदि। एक्किस्से सुहुमणिगोदवग्गणाए एगविस्सासुवचयपरमाणुम्हि वड्ढिदे अण्णा वग्गणा होदि; एगपरमाणुणा अहियत्तुवलंभादो। एवमणिच्छिज्जमाणे पुव्वं परूविदट्ठाणाणमभावो होज्ज। ण च एवं, तम्हा हेट्ठिल्लीणं ट्ठिदीणं दव्वाणं समुदय-

स्वस्थानकी अपेक्षा भेद-संघातसे होती है ॥ ११४ ॥

बादरनिगोदवर्गणाओंके संघातसे एक सूक्ष्मनिगोदवर्गणा नहीं होती, क्योंकि, एक सूक्ष्मनिगोदवर्गणामें जितने जीव हैं उतने बादर निगोद जीवोंके द्वारा आरम्भ की गई सूक्ष्मनिगोदवर्गणाका अभाव है।

शंका– यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान–नीचेकी वर्गणाओंके संघातसे नहीं होती इस वचनसे जाना जाता है।

अथवा बादर निगोदोंका सूक्ष्म निगोदरूपसे होनेमें विरोध है, इसलिए बादर निगोद सूक्ष्मनिगोदवर्गणाका आरम्भ नहीं करते। जब कि सूक्ष्म बादर नहीं है और बादर सूक्ष्म नहीं है, इसलिए सूक्ष्म निगोदोंके द्वारा ही सूक्ष्मनिगोदद्रव्यवर्गणा आरम्भ की जाती है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। बादर निगोद और प्रत्येकशरीर जीवोंके मर कर सूक्ष्म निगोदोंमें उत्पन्न होने पर उनका बादर निगोदपन और प्रत्येकशरीरपन नहीं रहता, क्योंकि, विरुद्ध परिणामोंकी युगपत् वृत्ति होनेमें विरोध है। यहां यह अर्थ प्रधान है। इसे प्रत्येकशरीरवर्गणा और बादरनिगोदवर्गणा में भी कहना चाहिए। महास्कन्धके भेदसे भी सूक्ष्मनिगोदवर्गणा नहीं होती, क्योंकि, पुर्वोक्त दोषों का प्रसंग आता है। किन्तु भेद-संघातसे होती है। सूक्ष्मनिगोदके अवान्तर भेदरूप वर्गणाओंके भेद-संघातसे सूक्ष्मनिगोदवर्गणा उत्पन्न होती है यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

शंका–एक सूक्ष्मनिगोदवर्गणामें एक विस्रसोपचय परमाणुके बढ़ने पर अन्य वर्गणा होती है, क्योंकि, वहां एक परमाणु अधिक देखा जाता है। ऐसा नहीं मानने पर पहले कहे गये स्थानोंका अभाव होता है। परन्तु ऐसा है नहीं, इसलिए नीचेकी स्थितिवाले द्रव्योंके समुदय–

✡ ता० प्रतौ '-वग्गणभावादो' इति पाठः। अ-आ-प्रत्योः 'एगवग्गणाभावादो' इति पाठः।

समागमेण सुहुमणिगोदवग्गणाए होदव्वमिदि । एत्थ परिहारो वुच्चदे– जुत्तमेदं जदि पज्जवट्ठियणओ अवलंबिदो होदि । ट्ठाणपरूवणाए पुण ण दोसो; पज्जवट्ठियणयावलंबणादो । एत्थ पुण दव्वट्ठियणओ अवलंबिदो त्ति परमाणुवड्ढीए हाणीए वा ण वग्गणाए अण्णत्तं किंतु जीवाणं समागमेण भेदेण च सचित्तवग्गणुप्पत्ती होदि । तेण हेट्ठिल्लीणं दव्वाणं समागमेण सचित्तवग्गणाओ ण उप्पज्जंति त्ति भणिदं होदि ।

सुहुमणिगोदवग्गणाणमुवरि महाखंधदव्ववग्गणा णाम किं भेदेण किं संघादेण किं भेदसंघादेण ॥ ११५ ॥

सुगमं ।

सत्थाणेण भेदसंघादेण ॥ ११६ ॥

हेट्ठिमाणं संघादेण बिदियमहाखंधवग्गणा ण उप्पज्जदि; तिस्से सव्वद्धमेग✱वग्गणत्तादो । ण च एगादिपरमाणुपोग्गलेसु वड्ढिदेसु अण्णा वग्गणा होदि; एववग्गणं मोत्तूण तत्थ बिदियवग्गणाणुवलंभादो । किंतु भेदसंघादेण होदि; पज्जवट्ठियणयावलंबणादो . तं जहा- एगादिअणंतपरमाणुपोग्गलेसु महाखंधादो❋फट्टियगदेसु भेदेण अण्णा महाखंध

समागमसे सूक्ष्मनिगोदवर्गणा होनी चाहिए ?

समाधान–इस शंकाका समाधान करते हैं–पर्यायार्थिक नयका यदि अवलम्बन लिया जाय तो यह कहना युक्त है । फिर भी स्थानप्ररूपणामें कोई दोष नहीं है, क्योंकि, वहाँ पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन लिया गया है । परन्तु यहाँ पर द्रव्यार्थिक नयका अवलम्बन लिया गया है, इसलिए परमाणुकी वृद्धि और हानिसे वर्गणामें अन्यपना नहीं आता, किन्तु जीवोंके समागम और भेदसे सचित्तवर्गणाकी उत्पत्ति होती है, इसलिए नीचेके द्रव्योंके समागमसे सचित्तवर्गणायें नहीं उत्पन्न होतीं यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

सूक्ष्मनिगोदवर्गणाओंके ऊपर महास्कन्धद्रव्यवर्गणा क्या भेदसे होती है, क्या संघातसे होती है या क्या भेद-संघातसे होती है ॥ ११५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

स्वस्थानकी अपेक्षा भेद-संघातसे होती है ॥ ११६ ॥

नीचेकी वर्गणाओंके संघातसे दूसरी महास्कन्धवर्गणा नहीं उत्पन्न होती है, क्योंकि, वह सर्वत्र एक वर्गणारूप है । एक आदि परमाणु पुद्गलोंके बढ़नेपर अन्य वर्गणा होती है यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, एक वर्गणाको छोड़कर वहाँ दूसरी वर्गणा नहीं पाई जाती । किन्तु वह भेद-संघातसे होती है, क्योंकि, यहाँ पर पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन लिया गया है । यथा–– महास्कन्धसे एक आदि अनन्त परमाणु पुद्गलोंके विलग होकर चले जानेपर भेदसे

✱ ता० प्रतौ ' सव्वत्थ एग– ' इति पाठः । ❋ आ० प्रतौ ' –अणंतपोग्गलेसु परमाणुसु महाखंधादो ' इति पाठः ।

दव्ववग्गणा होदि । तत्थेव एगादिअणंतेसु समागदेसु संघादेण अण्णा महाखंधदव्व-वग्गणा होदि । अक्कमेण उवचयावचयेहि वि भेदसंघादेण महाखंधदव्ववग्गणा होदि । एवं तीहि पयारेहि सव्वत्थ भेदसंघादस्स अत्थपरूवणा✿ कायव्वा । उवरिमाणं भेदेण हेट्ठा अपुव्ववग्गणुप्पत्ती भेदजणिदा णाम । हेट्ठिमाणं वग्गणाणं समागमेण सरिसधणियसरूवेण अण्णवग्गणुप्पत्ती संघादजा णाम । ण च एदाओ दो वि एत्थ अत्थि, वग्गणबहुत्ताभावादो । एवमेगसेडिवग्गणणिरूवणा समत्ता ।

संपहि णाणासेडिवग्गणाणिरूवणा एवं चेव कायव्वा । का णाणासेडी णाम ? सरिसधणियाणं मुत्ताहलोलिसमाणपंतीयो णाणासेडि णाम ।

एवं वग्गणाणिरूवणे त्ति समत्तमणुयोगद्दारं ।

चोद्दससु अणुयोगद्दारेसु दोण्णमणुयोगद्दाराणं परूवणं काऊण सेसबारसण्ण-मणुयोगद्दाराणं सुत्तकारण☼ किमट्ठं परूवणा ण कदा । ण ताव अजाणंतेण ण कदा; चउवीसअणुयोगद्दारसरूवमहाकम्मपयडिपाहुडपारयस्स भूदबलिभयवंतस्स तदपरि-ण्णाणविरोहादो । ण विस्सरणालुएण होंतेण ण कदा; अप्पमत्तस्स तदसंभवादो

अन्य महास्कन्ध द्रव्यवर्गणा होती है । उसीमें एक आदि अनन्त परमाणु पुद्गलोंके आ जानेपर संघातसे अन्य महास्कन्ध वर्गणा होती है । तथा एक साथ उपचय और अपचय होनेसे भेद-संघातसे महास्कन्धद्रव्यवर्गणा होती है । इस प्रकार सर्वत्र तीन प्रकारसे भेद-संघातकी अर्थ प्ररूपणा करनी चाहिए । उपरिम वर्गणाओंके भेदसे नीचे अपूर्व वर्गणाकी उत्पत्ति भेद जनित कही जाती है और नीचेकी वर्गणाओंके समागमसे सदृशधनरूपसे अन्य वर्गणाकी उत्पत्ति संघातज कही जाती है । परन्तु ये दोनों यहाँ पर नहीं हैं, क्योंकि, यहाँ पर बहुत वर्गणाओंका अभाव है ।

इस प्रकार एकश्रेणिवर्गणानिरूपणा समाप्त हुई ।

नानाश्रेणिवर्गणानिरूपणा इसी प्रकार करनी चाहिए ।

शंका-नानाश्रेणि किसे कहते हैं ?

समाधान-सदृश धनवालोंकी मुक्ताफलोंकी पंक्तिके समान पंक्तिको नानाश्रेणि कहते हैं ।

इस प्रकार वर्गणानिरूपणा अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

शंका-सूत्रकारने चौदह अनुयोगद्वारोंमेंसे दो अनुयोगद्वारोंका कथन करके शेष बारह अनुयोगद्वारोंका कथन किस लिए नहीं किया है । अजानकार होनेसे नहीं किया है यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, चौबीस अनुयोगद्वारस्वरूप महाकर्मप्रकृति प्राभृतके पारगामी भगवान् भूतबलिको उनका अजानकार माननेमें विरोध है । विस्मरणशील होनेसे नहीं किया है यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, अप्रमत्तका विस्मरणशील होना सम्भव नहीं है ।

✿ आ० प्रतौ ' सव्वत्थ भेदपरूवणा ' इति पाठः । ☼ आ० प्रतौ ' दोण्णमणियोगद्दाराणं सुत्तकारेण ' इति पाठः ।

त्ति? ण एस दोसो; पुव्वाइरियवक्खाणक्कमजाणावणट्ठं✠ तप्परूवणाकरणादो । किमट्ठमणुयोगद्दारा णाम तम्हि चेव♠ तत्थतणसयलत्थपरूवणं संखित्तवयणकलावेण कुणंति? वचिजोगासवदुवारेण ढुक्कमाणकम्मणिरोहट्ठं ।

तम्हा दोण्णमणुयोगद्दाराणं पुव्विल्लाणं परूवणा देसामासिय त्ति काऊण सेसबारसण्णमणुयोग⊛द्दाराणं कस्सामो । तं जहा एगसेडिवग्गणाधुवाधुवाणुगमेण परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा किं धुवा किमद्धुवा ? धुवा, अदीदाणागदवट्टमाणकालेसु एयपदेसियपरमाणुपोग्गलवग्गणविणासाभावादो । एवं संते एगपरमाणुस्स परमाणु-भावेण सव्वद्धमवट्ठाणं पावदि त्ति भणिदे ण एस दोसो; एक्कम्हि परमाणुम्हि विणट्ठे वि अण्णेसिं तज्जादीणं परमाणूणं संभवेण एयपदेसियवग्गणाए धुवत्तविरोहादो एगसेडिपरूवणाए णाणासेडिपरमाणूणं कथं गहणं कीरदे? ण एस दोसो; एगेणेव परमाणुणा एगसेडी❋ घेप्पदि त्ति णियमाभावादो । दुपदेसियवग्गणप्पहुडि जाव धुव-खंधदव्ववग्गणे त्ति ताव एदाओ वग्गणाओ किं धुवाओ किमद्धुवाओ? एत्थ पुव्वं व परूवणा कायव्वा; धुवत्तं पडि भेदाभावादो । सांतरणिरंतरदव्ववग्गणाओ जाअ-

---

समाधान-यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, पूर्व आचार्योंके व्याख्यानके क्रमका ज्ञान करानेके लिए शेष बारह अनुयोगद्वारोंका कथन नहीं किया है ।

शंका-अनुयोगद्वार वहींपर उसके सकल अर्थका कथन संक्षिप्त वचनकलापके द्वारा किसलिए करते हैं ?

समाधान- वचनयोगरूप आस्रवके द्वारा प्राप्त होनेवाले कर्मोंका निरोध करनेके लिए अनुयोगद्वार सकल अर्थका संक्षिप्त वचनकलापके द्वारा कथन करते हैं ।

इसलिए पूर्वोक्त दो अनुयोगद्वारोंका कथन देशामर्षक है ऐसा जान कर शेष बारह अनुयोगद्वारोंका कथन करते हैं । यथा-एकश्रेणीवर्गणा ध्रुवाध्रुवानुगमकी अपेक्षा परमाणुपुद्गल द्रव्यवर्गणा क्या ध्रुव है या क्या अध्रुव है ? ध्रुव है, क्योंकि, अतीत, अनागत और वर्तमान कालमें एकप्रदेशी परमाणुपुद्गलवर्गणाका विनाश नहीं होता ।

शंका-ऐसा होने पर एक परमाणुका परमाणुरूपसे सर्वदा अवस्थान प्राप्त होता है?

समाधान-यह कोई दोष नहीं हैं, क्योंकि, एक परमाणुके नष्ट होनेपर भी तज्जातीय अन्य परमाणुओंके सम्भव होनेसे एकप्रदेशी वर्गणाके ध्रुव होनेमें कोई विरोध नहीं आता ।

शंका-एकश्रेणिकी प्ररूपणामे नानाश्रेणिरूप परमाणुओंका ग्रहण कैसे करते हैं ?

समाधान-यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, इसी परमाणुसे एकश्रेणिका ग्रहण होता है ऐसा कोई नियम नहीं है ।

द्विप्रदेशी वर्गणासे लेकर ध्रुवस्कन्धवर्गणा तक ये वर्गणायें क्या ध्रुव हैं या क्या अध्रुव हैं ? यहां पहलेके समान कथन करना चाहिए, क्योंकि, ध्रुवत्वके प्रति कोई भेद नहीं है । जो

✠ ता० प्रतौ '-धवखाणक्कमेजाणावणट्ठं' इति पाठः । ♠ आ० प्रतौ 'णामंहि चेव' इति पाठः । ⊛ प्रतिषु 'सेसबादरसण्णिमणियोग-' इति पाठः । ❋ ता० प्रतौ 'एगएगसेडी' इति पाठः ।

असुण्णाओ ताओ असुण्णत्तणेण किं धुवाओ किमद्धुवाओ? अद्धुवाओ । कुदो ? असुण्णभावेण सव्वकालं तासिमवट्ठाणाभावादो । एत्थ सरिसधणियक्खंधेसु सव्वेसु विणट्ठेसु वग्गणाभावादो । एक्कम्हि वि खंधे संते वग्गणा अत्थि चेवे त्ति घेत्तव्वं । सुण्णाओ सुण्णत्तणेण किं धुवाओ किद्मधुवाओ ? अद्धुवाओ । कुदो ? सुण्णाओ णाम परमाणुविरहिदवग्गणाओ; तासि सुण्णभावेण अवट्ठाणाभावादो । हेट्ठिमवग्गणाओ संघादेण उवरिमवग्गणाओ भेदेण जं तेण कालेण सुण्णवग्गणमसुण्णं कुणंति त्ति भणिदं होदि । सुण्णाओ वि असुण्णाओ वि वग्गण्णाओ वग्गणादेसेण धुवाओ । को वग्गणादेसो णाम ? वग्गणाणं संभवसामण्णं वग्गणादेसो णाम । तेण वग्गणादेसेण सव्वाओ सव्वकालमत्थि त्ति धुवाओ । पत्तेयसरीरवग्गणाओ जाओ भवसिद्धियपाओग्गाओ सजोगि-अजोगीसु लब्भमाणाओ ताओ सुण्णाओ वि असुण्णाओ वि । कुदो ? सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तसजोगिअजोगिपाओग्गपत्तेयसरीरवग्गणट्ठाणेसु वट्टमाणकाले संखेज्जाणं चेव जीवाणमुवलंभादो । ण च संखेज्जेहि जीवेहि सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तपत्तेयसरीरवग्गणट्ठाणाणि वट्टमाणकाले आवूरिज्जंति; विरोहादो । एत्थ जाओ सुण्णाओ ताओ सुण्णत्तणेण अद्धुवाओ; सव्वकालमेदीए वग्गणाए सुण्णाए चेव होदव्वमिदि णियमाभावादो । जाओ असुण्णाओ ताओ वि असुण्णत्तणेण अद्धुवाओ; तासिमेगसरूवेण अवट्ठाणाभावादो ।

सान्तरनिरन्तरद्रव्यवर्गणाएं अशून्यरूप हैं वे अशून्यरूपसे क्या ध्रुव हैं या क्या अध्रुव हैं? अध्रुव हैं, क्योंकि, अशून्यरूपसे उनका सदा काल अवस्थान नहीं रहता । सदृश धनवाले सब स्कन्धोंके विनष्ट होनेपर वर्गणाका अभाव होता है । तथा एक भी स्कन्धके रहनेपर वर्गणा है ही ऐसा अर्थ यहां ग्रहण करना चाहिए । शून्य वर्गणाएं शून्यरूपसे क्या ध्रुब हैं या क्या अध्रुव हैं? अध्रुव हैं, क्योंकि शून्यका अर्थ है परमाणुओंसे रहित वर्गणायें, किन्तु उनका शून्यरूपसे सदा अवस्थान नहीं रहता । नीचेकी वर्गणाएं संघातसे और ऊपरकी वर्गणाएं भेदसे उस कालमें शून्यवर्गणाको अशून्यरूप करती है यह उक्त कथनका तात्पर्य है । शून्य वर्गणाएं और अशून्य वर्गणाएं भी वर्गणादेशकी अपेक्षा ध्रुव हैं ।

शंका – वर्गणादेश किसे कहते हैं ?

समाधान – वर्गणाओंके सम्भव सामान्यको वर्गणादेश कहते हैं ।

उस वर्गणादेशकी अपेक्षा सब वर्गणाएं सर्वदा हैं इसलिए ध्रुव हैं । जो भव्योंके योग्य प्रत्येकशरीरवर्गणाएं सयोगी और अयोगी जीवोंके प्राप्त होती हैं वे शून्यरूप भी है और अशून्यरूप भी है क्योंकि, सब जीवोंसे अनन्तगुणे सयोगी-अयोगीप्रायोग्य प्रत्येकशरीर वर्गणास्थानोंमेंसे वर्तमान कालमें संख्यात जीव ही उपलब्ध होते हैं । यह कहना कि संख्यात जीव वर्तमान कालमें सब जीवोंसे अनन्तगुणे प्रत्येकशरीरवर्गणास्थानोंको भर देंगे, ठीक नहीं है, क्योंकि ऐसा होनेमें विरोध आता है । यहां जो वर्गणायें शून्य है वे शून्यरूपसे अध्रुव है, क्योंकि, सर्वदा इस वर्गणाको शून्यरूप ही होनी चाहिए ऐसा कोई नियम नहीं है । जो वर्गणाएं अशून्यस्वरूप है वे अशून्यरूपसे अध्रुव है क्योंकि उन वर्गणाओंका एकरूपसे अवस्थान नहीं रहता ।

एदं संभवं पडुच्च परूविदं । वत्तिं पडुच्च पुण भण्णमाणे सजोगि-अजोगि-पाओग्गपत्तेयसरीरवग्गणट्ठाणेसु अणंताहि वग्गणाहि सुण्णभावेण अवट्ठिदाहि होदव्वं; तिसु वि कालेसु सजोगि-अजोगीहि अच्छुत्ताणंतट्ठाणसंभवादो । अभवसिद्धियपाओग्गाओ जाओ पत्तेयसरीरवग्गणाओ सुण्णाओ ताओ सुण्णत्तणेण अद्धुवाओ; सुण्णाणं पि वग्गणाणं उवरिमहेट्ठिमवग्गणाणं भेदसंघादेण पच्छा असुण्णत्तुवलंभादो । एदं पि संभवं पडुच्च परूविदं । वत्ति पडुच्च पुण णिहालिज्जमाणे सुण्णाओ✱ सुण्णत्तणेण अवट्ठिदाओ अत्थि; पुढवि-आउ-तेउ-वाउकाइएहि देव-णेरइय-सजोगि-अजोगि-जीवेहिय असंखेज्जलोगमेत्तेहि सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तपत्तेयसरीरवग्गणट्ठाणाण-मावूरणे संभवाभावादो । असुण्णाओ असुण्णत्तणेण अद्धुवाओ; पत्तेयसरीवग्गणद-व्वाणं वड्ढिहाणीहि विणा सव्वत्थमवट्ठाणाभावादो । वग्गणादेसेण पुण पत्तेयसरीरव-ग्गणाओ सव्वाओ धुवाओ होंति; सांतरणिरंतरवग्गणाणं व सव्वेसिं पत्तेयसरीरवग्ग-णट्ठाणाणं कम्हि वि काले सुण्णत्ताणुवलंभादो ।

बादरणिगोदवग्गणाओ जाओ भवसिद्धियपाओग्गाओ खीणकसायम्मि लब्भ-माणाओ ताओ सुण्णाओ सुण्णत्तणेण अद्धुवाओ; सुण्णाणं सुण्णभावेण सव्वकालम-वट्ठाणाभावादो । एदं संभवं पडुच्च परूविदं । वत्ति पडुच्च पुण भण्णमाणे सुण्णाओ सुण्णत्तणेण धुवाओ अत्थि; संखेज्जाणं खीणकसायाणं सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तखीण-

यह सम्भवकी अपेक्षा कहा है । परन्तु व्यक्तिकी अपेक्षा कथन करने पर सयोगी और अयोगीप्रायोग्य प्रत्येकशरीरवर्गणास्थानोंमेंसे अनन्त वर्गणायें शून्यरूपसे अवस्थित होनी चाहिए, क्योंकि, तीनों ही कालोंमें सयोगी और अयोगी जीवोंके द्वारा नहीं छुए गये अनन्त स्थान सम्भव हैं । तथा अभव्योंके योग्य जो प्रत्येकशरीरवर्गणायें शून्यरूप हैं वे शून्यरूपसे अध्रुव हैं, क्योंकि, शून्यरूप वर्गणाओंका भी उपरिम और अधस्तन वर्गणाओंके भेद-संघातसे बादमें अशून्यरूपसे सद्भाव पाया जाता है । यह भी सम्भवकी अपेक्षा कहा है । परन्तु व्यक्ति की अपेक्षा देखने पर शून्य वर्गणायें शून्यरूपसे अवस्थित हैं, क्योंकि, पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, देव, नारकी, सयोगी और अयोगी इन असंख्यात लोकप्रमाण सब जीवोंके द्वारा अनन्तगुणे प्रत्येकशरीरवर्गणास्थानोंका व्याप्त करना सम्भव नहीं है । अशून्य वर्गणायें अशून्यरूपसे अध्रुव हैं, क्योंकि, प्रत्येकशरीरवर्गणाद्रव्योंका वृद्धि और हानिके विना सर्वदा अवस्थान नहीं पाया जाता है । परन्तु वर्गणादेशकी अपेक्षा सब प्रत्येकशरीर वर्गणायें ध्रुव हैं, क्योंकि, सान्तरनिरन्तरवर्गणाओंके समान सब प्रत्येकशरीवर्गणास्थानोंका किसी भी कालमें शून्यपना नहीं पाया जाता ।

बादरनिगोदवर्गणायें जो कि भव्योंके योग्य क्षीणकषाय गुणस्थानमें उपलब्ध होती हैं वे शून्यरूप होकर शून्यरूपसे अध्रुव हैं, क्योंकि, शून्य वर्गणाओंका शून्यरूपसे सदा अवस्थान नहीं पाया जाता । यह सम्भवकी अपेक्षा कहा है । परन्तु व्यक्तिकी अपेक्षा कथन करने पर शून्य वर्गणायें शून्यरूपसे ध्रुव हैं, क्योंकि, संख्यात क्षीणकषाय जीवोंका सब जीवोंसे अनन्तगुणे

✱ ता० प्रतौ 'णिहालिज्जमाणेण सुण्णाओ' इति पाठः]

कसायपाओग्गबादरणिगोदट्ठाणेसु तिसु वि कालेसु वुत्तिविरोहादो। सुण्णाओ सुण्णत्तणेण अद्धुवाओ वि अत्थि; सुण्णाणं ट्ठाणाणं केसिं पि कम्हि वि काले असुण्णत्तुवलंभादो। असुण्णाओ असुण्णत्तणेण अद्धुवाओ; खीणकसायपाओग्गबादरणिगोदवग्गणाणं सव्वकालमवट्ठाणाभावादो। भावे वा ण कस्स वि णिव्वुई होज्ज; खीणकसायम्मि बादरणिगोदवग्गणाए संतीए केवलणाणुप्पत्तिविरोहादो। अभवसिद्धियपाओग्गाओ जाओ सुण्णाओ ताओ सुण्णत्तणेण अद्धुवाओ। कुदो? सुण्णाणं पि उवरिमहेट्ठिमवग्गणाणं भेदसंघादेण कालंतरे असुण्णत्तुवलंभादो। एदं संभवं पडुच्च परूविदं। वत्तिं पडुच्च पुण भण्णमाणे सुण्णाओ धुवाओ वि अत्थि। कुदो? असंखेज्जलोगमेत्तबादरणिगोदवग्गणाणं सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तसेचीयट्ठाणेसु अदीदकाले वि वुत्तिविरोहादो। तं जहा एक्कम्हि अदीदसमए जदि असंखेज्जलोगमेत्ताणि बादरणिगोदट्ठाणाणि लब्भंति तो सव्विस्से अदीदद्धाए किं लभामो त्ति फलगुणिदिच्छाए पमाणेणोवट्टिदाए अदीदकालादो असंखेज्जलोगगुणमेत्ताणि चेव बादरणिगोदवग्गणासु असुण्णट्ठाणाणि होंति। अण्णाणि सव्वट्ठाणाणि सुण्णाणि चेव। तेण सुण्णाओ सुण्णत्तणेण धुवाओ। विग्गहगदीए वट्टमाणा बादरणिगोदजीवा किं बादरणिगोदवग्गणासु पदंति आहो पत्तेयसरीरवग्गणासु त्ति? ण ताव पत्तेयसरीरवग्गणासु पदंति; णिगोदजीवाणं पत्तेयसरीरजीवत्तविरोहादो पत्तेयसरीरवग्गणाए असंखेज्जलोगपमाणत्तं

क्षीणकषायप्रायोग्य बादरनिगोदस्थानोंमें तीनों ही कालोंमें वृत्ति माननेमें विरोध आता है। तथा शून्यवर्गणायें शून्यरूपसे अध्रुव भी हैं, क्योंकि, कोई भी शून्य स्थान किसी भी समय अशून्यरूप होकर उपलब्ध होते हैं। अशून्य वर्गणायें अशून्यरूपसे अध्रुव हैं, क्योंकि, क्षीणकषायप्रायोग्य बादरनिगोदवर्गणाओंका सर्वदा अवस्थान नहीं पाया जाता। यदि उनका अवस्थान होता है तो किसी भी जीवको मोक्ष नहीं हो सकता है, क्योंकि, क्षीणकषायमें बादरनिगोदवर्गणाके रहते हुए केवलज्ञानकी उत्पत्ति होनेमें विरोध है। अभव्योंके योग्य जो शून्य वर्गणायें हैं वे शून्यरूपसे अध्रुव हैं, क्योंकि, शून्य वर्गणाओंका भी उपरिम और अधस्तन वर्गणाओंके भेद-संघातसे कालान्तरमें अशून्यपना पाया जाता है। यह सम्भवकी अपेक्षा कहा है। परन्तु व्यक्तिकी अपेक्षा कथन करने पर शून्य वर्गणायें ध्रुव भी हैं, क्योंकि असंख्यात् लोकप्रमाण बादरनिगोदवर्गणाओंके सब जीवोंसे अनन्तगुणे सेचीयस्थानोंमें अतीत कालम भी वृत्ति होनेमें विरोध है। खुलासा इस प्रकार है-एक अतीत समयमें यदि असंख्यात लोकप्रमाण बादर निगोदस्थान पाये जाते हैं तो सब अतीत कालमें कितने प्राप्त होंगे इस प्रकार फलसे गुणित इच्छाको प्रमाणसे भाजित करनेपर अतीत कालसे असंख्यात लोकगुणे बादर निगोदवर्गणाओंमें अशून्यस्थान प्राप्त होते हैं। अन्य सब स्थान शून्य ही हैं। इसलिए शून्य वर्गणायें शून्यरूपसे ध्रुव हैं।

शंका-विग्रहगतिमें विद्यमान बादर निगोद जीव क्या बादरनिगोदवर्गणाओंमें गर्भित हैं या प्रत्येकशरीरवर्गणाओंमें गर्भित हैं? प्रत्येकशरीरवर्गणाओंमें तो गर्भित हो नहीं सकते, क्योंकि, एक तो निगोद जीवोंको प्रत्येकशरीर जीव होनेमें विरोध है, दूसरे प्रत्येक

मोत्तूण आणंतियप्पसंगादो च । तदो बादरणिगोदवग्गणाए वट्टमाणकाले अणंताए होदव्वमिदि? ण एस दोसो; विग्गहगदीए वि एगबंधणबद्धअणंताणंतबादरणिगोद-जीवेहि एगबादरणिगोदवग्गणुप्पत्तीदो वट्टमाणकाले बादरणिगोदवग्गणाओ असंखे-ज्जलोगमेत्ताओ चेवे त्ति घेत्तव्वं सुण्णाओ सुण्णत्तणेण अद्धुवाओ वि उवरिमहेट्ठिम-वग्गणाणं भेदसंघादेण सुण्णाणं पि कालंतरे असुण्णत्तुवलंभादो । असुण्णाओ असुण्ण-त्तणेण अद्धुवाओ । कुदो ? वग्गणाणमेगसरूवेण सव्वद्धमवट्ठाणाभावादो । वग्ग-णादेसेण पुण सव्वाओ धुवाओ; अणंताणंतवग्गणाणं सव्वद्धमुवलंभादो ।

सुहुमणिगोदवग्गणाओ सुण्णत्तणेण अद्धुवाओ सुण्णवग्गणाहि सव्वकालं सुण्णत्तणेणेव अच्छिदव्वमिदि णियमाभावादो । एदं संभवं पडुच्च परूविदं । वत्तिं पडुच्च पुण भण्णमाणे सुण्णाओ सुण्णत्तणेण धुवाओ वि अत्थि; वट्टमाणकाले असं-खेज्जलोगमेत्तसुहुमणिगोदवग्गणाहि अदीदकालेण वि सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तट्ठाणा-वूरणं पडि संभवाभावादो । कारणं बादरणिगोदाणं व वत्तव्वं । अद्धुवाओ वि; उवरिमहेट्ठिमवग्गणाणं भेदसंघादेण सुण्णाण पि कालंतरे असुण्णत्तुवलंभादो । असु-णाओ सुहुमणिगोदवग्गणाओ असुण्णत्तणेण अद्धुवाओ । कुदो? सुहुमणिगोदवग्गणाण-मवट्ठिदसरूवेण अवट्ठाणाभावादो ।

शरीरवर्गणाऐं असंख्यात लोकमात्र प्रमाणको छोड़कर अनन्त हो जायँगी । इसलिए बादर निगोदवर्गणा वर्तमान कालमें अनन्त होनी चाहिए ?

समाधान–यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, विग्रहगतिमें भी एक बन्धनमें बँधे हुए अनन्तानन्त बादरनिगोद जीवोंकी एक बादरनिगोदवर्गणा बन जाती है । इसलिए वर्तमान कालमें बादरनिगोदवर्गणाऐं असंख्यात लोकप्रमाण ही होती हैं ऐसा ग्रहण करना चाहिए ।

शून्य वर्गणाऐं शून्यरूपसे अध्रुव भी हैं, क्योंकि, उपरिम और अधस्तन वर्गणाओंके भेद-संघातसे शून्य वर्गणाऐं भी कालान्तरमें अशून्यरूप होकर उपलब्ध होती हैं । अशून्य वर्गणाऐं अशून्यरूपसे अध्रुव हैं, क्योंकि, वर्गणाओंका एकरूपसे सदा अवस्थान नही पाया जाता, वर्गणादेशकी अपेक्षा तो सब वर्गणाऐं ध्रुव हैं, क्योंकि, अनन्तानन्त वर्गणाऐं सर्वदा उपलब्ध होती हैं ।

सूक्ष्मनिगोदवर्गणाऐं शून्यरूपसे अध्रुव हैं, क्योंकि, शून्य वर्गणाओंका सर्वदा शून्यरूपसे ही रहना चाहिए ऐसा कोई नियम नहीं है । यह सम्भवकी अपेक्षा कहा है । परन्तु व्यक्तिकी अपेक्षा कथन करने पर शून्य वर्गणाऐं शून्यरूपसे ध्रुव भी हैं क्योंकि, वर्तमान कालमें असंख्यात लोकप्रमाण सूक्ष्मनिगोदवर्गणाओंके द्वारा पूरे अतीत कालमें भी सब जीवोंसे अनन्तगुणे स्थानोंका पूरा करना सम्भव नहीं है। कारण बादर निगोद जीवोंके समान कहना चाहिए । वे अध्रुव भी हैं, क्योंकि, उपरिम और अधस्तन वर्गणाओंके भेद संघातसे शून्य वर्गणाऐं भी काला-न्तरमें अशून्यरूप होकर उपलब्ध होती हैं । अशून्य सूक्ष्मनिगोदवर्गणाऐं अशून्यरूपसे अध्रुव हैं, क्योंकि, सूक्ष्मनिगोदवर्गणाओंका अवस्थितरूपसे अवस्थान नहीं पाया जाता ।

महाखंधदव्ववग्गणाओ सुण्णाओ सुण्णत्तणेण अद्धुवाओ; सुण्णाहि सुण्णभावेणेव अच्छिदव्वमिदि णियमाभावादो। एसो संभवणिद्देसो। वत्ति पडुच्च पुण भण्णमाणे सुण्णाओ धुवाओ वि अत्थि; अदीदकाले समयं पडि एक्केक्के महाखंधट्ठाणे समुप्पण्णे वि सव्वम्हि अदीदकाले अदीदकालमेत्ताणि चेव असुण्णट्ठाणाणि लद्धूण सेससव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तमहाखंधसेचीयट्ठाणाणि; सुण्णभावेण अवट्ठाणुवलंभादो। अद्धुवाओ वि अत्थि; भेदसंघादेण केण वि कालेण सुण्णाणं पि असुण्णत्तुवलंभादो। असुण्णाओ असुण्णत्तणेण अद्धुवाओ। कुदो? महाखंधवग्गणाणमेगसरूवेण सव्वकालमवट्ठाणाभावादो। एवं चेव णाणासेडिधुवाधुवाणुगमो वि वत्तव्वो; विसेसाभावादो। एवं धुवाधुवाणुगमो त्ति समत्तमणुयोगद्दारं।

एगसेडिवग्गणसांतरणिरंतराणुगमेण परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणप्पहुडि जाव धुवखंधदव्ववग्गणे त्ति ताव एदाओ वग्गणाओ किं सांतराओ किं णिरंतराओ किं सांतरणिरंतराओ? णिरंतराओ कुदो? अणंतरेण विणा मुत्ताहलोलि व्व अवट्ठाणादो। अचित्तअद्धुवखंधदव्ववग्गणाओ किं सांतराओ किं णिरंतराओ किं सांतरणिरंतराओ? सांतरणिरंतराओ✡, कत्थ वि णिरंतरेण कत्थ वि सांतरेण वग्गणाणमवट्ठाणुवलंभादो। पुणो तिस्से सांतरणिरंतरवग्गणाए आइरियाणमविरुद्धुवदेसबलेण इमा परूवणा

शून्यरूप महास्कन्धद्रव्यवर्गणायें शून्यरूपसे अध्रुव हैं, क्योंकि, शून्य वर्गणाओंको शून्यरूपसे ही रहना चाहिए ऐसा कोई नियम नहीं है। यह सम्भवकी अपेक्षा निर्देश किया है परन्तु व्यक्तिकी अपेक्षा कथन करने पर शून्य वर्गणायें ध्रुव भी हैं, क्योंकि, अतीत कालके प्रत्येक समय में एक एक महास्कन्धस्थानके उत्पन्न होनेपर भी सब अतीत कालमें अतीत कालमात्र ही अशून्यस्थान प्राप्त होकर शेष सब जीवोंसे अनन्तगुणे महास्कन्ध सेचीयस्थान होते हैं, क्योंकि, उनका शून्यरूपसे अवस्थान पाया जाता है। वे अध्रुव भी है, क्योंकि, भेद संघातके द्वारा किसी भी कालमें शून्य वर्गणायें भी अशून्यरूप होकर उपलब्ध होती है। अशून्य वर्गणामें अशून्यरूपसे अध्रुव है, क्योंकि, महास्कन्धवर्गणाओंका सर्वदा एकरूपसे अवस्थान नहीं पाया जाता। इसी प्रकार नानाश्रेणिध्रुवाध्रुवानुगमका भी कथन करना चाहिए, क्योंकि, इससे उसमें कोई विशेषता नहीं है।

इस प्रकार ध्रुवाध्रुवानुगम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

एकश्रेणिवर्गणासान्तरनिरन्तरानुगमकी अपेक्षा परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणासे लेकर ध्रुवस्कन्धद्रव्यवर्गणा तक क्या सान्त हैं, क्या निरन्तर हैं या क्या सान्तर-निरन्तर हैं? निरन्तर हैं, क्योंकि, अन्तरके बिना मुक्ताफलोंकी पंक्तिके समान वे अवस्थित हैं। अचित्त अध्रुवस्कन्धद्रव्यवर्गणायें क्या सान्तर हैं, क्या निरन्तर हैं या क्या सान्तर-निरन्तर हैं? सान्तर-निरन्तर हैं, क्योंकि, कहीं पर निरन्तररूपसे और कहीं पर सान्तररूपसे वे वर्गणायें उपलब्ध होती है। पुनः उस सान्तरनिरन्तवर्गणाकी आचार्योंके विरोधरहित उपदेशके

✡ ता० प्रतौ ' सांतरणिरंतराओ (कि सांतरणिरंतर) सांतरणिरंतराओ आ० प्रतौ ' सांतरणिरंतराओ सांतरणिरंतर सांतरणिरंतराओ ' इति पाठः ।

कीरदे । तं जहा – तत्थ जासिं☼ वग्गणाणं दोसु वि पासेसु सुण्णाओ मज्झे एक्का चेव वग्गणा असुण्णा तासिं ट्ठविदसलागाओ थोवाओ । जासिं दोसु वि पासेसु सुण्णाओ होदूण मज्झे णिरंतरं दोद्दो✽ असुण्णवग्गणाओ होंति तासिं ट्ठविदसलागाओ अणंतगुणाओ जासिं दोसु♣ वि पासेसु सुण्णाओ होदूण मज्झे णिरंतरं तिण्णि तिण्णि असुण्णवग्गणाओ होंति तासिं ट्ठविदसलागाओ अणंतगुणाओ । एवं चत्तारि चत्तारि पंच पंच छ छ सत्त सत्त अट्ठ अट्ठ णव णव दस दस संखेज्जाओ संखेज्जाओ असंखेज्जाओ असंखेज्जाओ णिरंतरवग्गणाओ । एदासिमुच्चिवणिदूण ट्ठविदसलागाओ अणंतरहेट्ठिमसलागाहिंतो पुध पुध अणंतगुणाओ । तदो उभयपासेसु सुण्णाओ होदूण मज्झे जाओ णिरंतरमणंताओ वग्गणाओ तासिं ट्ठविदसलागाओ अणंतगुणाओ । एवमणंताणंतवग्गणाणं ट्ठविदसलागाओ अणंतरहेट्ठिमहेट्ठिमसलागाहिंतो अणंतगुणक्कमेण अणंतरद्धाणं गच्छंति । तदो उवरिमअणंताणं वग्गणाणं उभयदिसासु सुण्णाणं ट्ठविदसलागाओ अणंतरहेट्ठिमहेट्ठिमसलागाहिंतो असंखेज्जगुणाओ असंखेज्जगुणाओ होदूण गच्छंति जाव अणंतमद्धाणं गदं ति । तदो उवरिं संखेज्जगुणाओ संखेज्जगुणाओ होदूण ट्ठविदसलागाओ णिरंतरं गच्छंति जाव अण्णं अणंतमद्धाणं☋ गदं ति । तेण परं संखेज्ज♠दिभागब्भहियाओ

बलसे यह प्ररूपणा करते हैं । यथा–उनमें जिन वर्गणाओंके दोनों ही पार्श्वभागोंमें शून्य वर्गणायें हैं और मध्यमें एक ही वर्गणा अशून्यरूप है उनकी स्थापित की गई शलाकायें स्तोक हैं । जिन वर्गणाओंके दोनों पार्श्वभागोंमें शून्य वर्गणायें हैं और मध्यमें निरन्तर दो दो अशून्य वर्गणायें हैं उनकी स्थापित की गई शलाकायें अनन्तगुणी हैं । जिन वर्गणाओंके दोनों ही पार्श्वभागोंमें शून्य वर्गणायें हैं और मध्यमें निरन्तर तीन तीन अशून्य वर्गणायें हैं उनकी स्थापित की गई शलाकायें अनन्तगुणी हैं । इस प्रकार चार चार, पाँच पांच, छह छह, सात सात, आठ आठ, नौ नौ, दस दस, संख्यात संख्यात और असंख्यात असंख्यात जो निरन्तर वर्गणायें हैं उनकी अलग अलग करके स्थापित की गई शलाकायें अनन्तर अधस्तन शलकाओं से पृथक् पृथक् अनन्तगुणी हैं । अनन्तर दोनों पार्श्वभागोंमें शून्य वर्गणायें होकर मध्यमें जो निरन्तर अनन्त वर्गणायें हैं उनकी स्थापित की गई शलाकायें अनन्तगुणी हैं । इसी प्रकार अनन्तानन्त वर्गणाओंकी स्थापित की गई शलकायें अनन्तर अधस्तन अधस्तन शलाकाओंसे अनन्तगुणित क्रमसे अनन्तर स्थानकों जाती हैं । तदनन्तर उपरिम अनन्त वर्गणाओंकी दोनों दिशाओं में शून्य वर्गणाओंकी स्थापित की गई शलाकायें अनन्तर अधस्तन अधस्तन शलाकाओंसे असंख्यातगुणी असंख्यातगुणी होकर अनन्त स्थानोंके व्यतीत होनेतक जाती हैं । तदनन्तर आगे स्थापित की गई शलाकायें संख्यातगुणी संख्यातगुणी होकर अन्य अनन्त स्थानोंके व्यतीत होने

☼ ता० प्रतौ 'तत्थ ता (जा) सिं' अ०का० प्रत्योः 'तत्थ जासिं' इति पाठः । ✽ म० प्रतिपाठोऽयम् । अ०का० प्रत्योः 'णिरंतरं सांतरणिरंतरं दोद्दो–' इति पाठः । ♣ ता० प्रतौ 'अणंतगुणाओ ता (जा) सिं दोसु अ० का० प्रत्योः ' अणंतगुणाओ तासिं दोसु ' इति पाठः । ☋ ता० प्रतौ 'जाव अणंतअद्धाणं' इति पाठः । ♠ अ आ प्रत्योः 'संखेज्जदि' इति पाठः ।

संखेज्जदिभागब्भहियाओ होदूण णिरंतरं गच्छंति जाव अण्णमणंतमद्धाणं✿ गदं त्ति। तेण परमसंखेज्जदिभागब्भहियाओ असंखेज्जदिभागब्भहियाओ होदूण णिरंतरं गच्छंति जाव अणंतमद्धाणं गदं ति। तेण परमणंतभागब्भहियाओ अणंतभागब्भहियाओ होदूण णिरंतरं गच्छंति जाव एदाओ अणंतमद्धाणं गदं ति। तेण परमणंतभागहीणाओ अणंतभागहीणाओ होदूण णिरंतरं गच्छंति जाव अण्णं अणंतमद्धाणं गदं ति। तेण परमसंखेज्जदिभागहीणाओ असंखेज्जदिभागहीणाओ होदूण णिरंतरं गच्छंति❀ जाव अण्णमणंतमद्धाणं गदं ति। तेण परं संखेज्जदिभागहीणाओ संखेज्जदिभागहीणाओ होदूण णिरंतरं गच्छंति जाव अण्णमणंतमद्धाणं गदं ति। तेण परं संखेज्जगुणहीणाओ संखेज्जगुणहीणाओ होदूण णिरंतरं गच्छंति जाव अण्णमणंतमद्धाणं गदं ति। तेण परमसंखेज्जगुणहीणाओ असंखेज्जगुणहीणाओ होदूण गच्छंति जाव अण्णं अणंतमद्धाणं तेण परमणंतगुणहीणाओ अणंतगुणहीणाओ होदूण णिरन्तरं गच्छंति जाव अण्णमणंतमद्धाणं गदं ति। एवमसुण्णवग्गणाणमेगादिएगुत्तराणं उभयपाससुण्णाणं जाओ ट्ठविदसलागाओ ताओ छव्विहाए वड्ढीए छव्विहाए हाणीए च अवट्ठाणं कुणंति त्ति घेत्तव्वं। पत्तेयसरीरक्खंधदव्ववग्गणाओ भवसिद्धियपाओग्गाओ जाओ सजोगि-अजोगीसु लब्भमाणाओ ताओ सांतराओ चेव। कुदो? सव्वजीवेहि अणंत-गुणमेत्तट्ठाणेसु केवलिपाओग्गेसु संखेज्जाणं केवलीणं णिरंतरमवट्ठाणविरोहादो। तम्हा

तक जाती हैं। उससे आगे अन्य अनन्त स्थानोंके व्यतीत होने तक संख्यातभाग अधिक संख्यात भाग अधिक होकर निरन्तर शलाकाएँ जाती हैं। उससे आगे अनन्त स्थानोंके व्यतीत होने तक असंख्यातवेंभाग अधिक असंख्यातवेंभाग अधिक होकर निरन्तर शलाकाएँ जाती हैं। उससे आगे अनन्त स्थानोंके जाने तक अनन्तवें भाग अधिक अनन्तवेंभाग अधिक होकर निरन्तर जाती हैं। उससे आगे अन्य अनन्त अध्वानके व्यतीत होनेतक अनन्तवेंभाग हीन अनन्तवेंभाग हीन होकर निरन्तर जाती हैं। उससे आगे अन्य अनन्त अध्वानके व्यतीत होनेतक असंख्यातवें भाग हीन असंख्यातवें भाग हीन होकर निरन्तर जाती हैं। उससे आगे अन्य अनन्त अध्वानके व्यतीत होने तक संख्यातवें भाग हीन संख्यातवें भाग हीन होकर निरन्तर जाती हैं। उससे आगे अन्य अनन्त अध्वानके व्यतीत होने तक संख्यातगुणी हीन संख्यातगुणी हीन होकर निरन्तर जाती है। उससे आगे अन्य अनन्त अध्वानके व्यतीत होने तक असंख्यातगुणी हीन असंख्यातगुणी हीन होकर निरन्तर जाती हैं। उससे आगे अन्य अनन्त अध्वानके व्यतीत होने तक अनन्तगुणी हीन अनन्तगुणी हीन होकर निरन्तर जाती है। इस प्रकार एकादि एकोत्तर अशून्य वर्गणाओंके उभय पार्श्वमें शून्य वर्गणाओंकी जो स्थापित की गई शलाकायें हैं वे छह प्रकार की वृद्धि और छह प्रकारकी हानिके द्वारा अवस्थान करती हैं ऐसा अर्थ यहाँ ग्रहण करना चाहिए। भव्योंके योग्य जो प्रत्येक शरीरस्कन्धद्रव्यवर्गणायें सयोगी और अयोगी गुणस्थानमें लभ्यमान हैं वे सान्तर ही हैं, क्योंकि, सब जीवोंसे अनन्तगुणे केवलिप्रायोग्य स्थानोंमें संख्यात केवलियोंके निरन्तर रहनेमें विरोध है। इसलिए वर्तमान कालमें विवक्षित स्थान सान्तर ही हैं। अतीत कालमें भी केवलियोंके द्वारा

✿ ता० प्रतौ जाव अणंत (मणंत) मद्धाणं इति पाठः। ❀ आ० प्रतौ 'जाव अणंतमद्धाणं' इति पाठः।

वट्टमाणकाले अप्पिदट्ठाणाणि सांतराणि चेव । अदीदकाले वि केवलीहि फोसिदपत्ते-यसरीरवग्गणट्ठाणाणि सांतराणि चेव । कुदो? सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तकेवलिपा-ओग्गपत्तेयसरीरट्ठाणेसु सिद्धेहिंतो असंखेज्जगुणमेत्ताणमेवट्ठाणाणं❀ फासुवलंभादो । तं जहा-एक्कस्स सिद्धस्स जदि देसूणपुव्वकोडिमेत्ताणि✿ चेव पत्तेयसरीरट्ठाणाणि लब्भंति तो सव्वेसिं सिद्धाणं किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए सिद्धेहिंतो असंखेज्जगुणमेत्ताणि चेव जीवफोसिदट्ठाणाणि लब्भंति । एदं पि च णत्थि; सव्वेसिं पुव्वकोडिमेत्ताउअभावादो । सव्वेसिमपुणरुत्तट्ठाणाणि चेव होंति त्ति णियमाभावादो च ।

पस्समाणे वि सांतराओ। को पस्समाणकालो णाम? एस कालो। कथं तत्थ सांत-राओ वुच्चदे? सव्वकालमदीदद्धा सव्वजीवरासीए अणंतिमभागो; अण्णहा संसारिजी-वाणमभावप्पसंगादो । सव्वकालमदीदकालस्स सिद्धा असंखेज्जदिभागो चेव; छम्मास-मंतरिय णिव्वुइगमणणियमादो । एक्केक्कस्स सिद्धस्स देसूणपुव्वकोडिमेत्ताणि चेव पत्तेयसरीरट्ठाणाणि उक्कस्सेण लब्भंति; केवलिविहारकालस्स देसूण पुव्वकोडिमेत्तस्सेव उवलंभादो। तम्हा पस्समाणेहि सांतराओ चेवेत्ति घेत्तव्वं । सेचीयाए पुण सव्वट्ठाणाणि णिरंतराणि । एदं चेव ट्ठाणं जीवसहिदं होदि एदाणि ण होंति चेवे त्ति णियमा-

---

स्पर्श किये गये प्रत्येकशरीरवर्गणास्थान सान्तर ही हैं, क्योंकि, सब जीवोंसे अनन्तगुणे केवलि-प्रायोग्य प्रत्येकशरीरस्थानोंमें मात्र सिद्धोंसे असंख्यातगुणे स्थानोंका स्पर्श उपलब्ध होता है । यथा-एक सिद्धके यदि पूर्वकोटिमात्र प्रत्येकशरीरस्थान उपलब्ध होते हैं तो सब सिद्धोंके कितने प्राप्त होंगे इस प्रकार फल गुणित इच्छामें प्रमाणका भाग देने पर सिद्धोंसे असंख्यातगुणे स्थान ही जीवोंके द्वारा स्पर्श किये गये पाये जाते है पर यह भी नहीं है, क्योंकि, एक तो सबके एक पूर्वकोटिप्रमाण आयु नहीं पाई जाती, दूसरे सब जीवों के अपुनरुक्त स्थान ही होते हैं ऐसा कोई नियम नहीं है ।

दृश्यमान (वर्तमान) कालमें भी सान्तर हैं ।

शंका- दृश्यमान काल किसे कहते हैं ?

समाधान-यह अर्थात् वर्तमान कालको दृश्यमान काल कहते हैं ।

शंका-इसमें वर्गणायें सान्तर कैसे कही जाती हैं ?

समाधान-सर्वदा अतीत काल सब जीव राशिके अनन्तवें भागप्रमाण रहता है, अन्यथा सब जीवोंके अभाव होनेका प्रसंग आता है ।

सिद्ध जीव सर्वदा अतीत कालके असंख्यातवें भागप्रमाण ही होते हैं, क्योंकि, छह महीनेके अन्तरसे मोक्ष जानेका नियम है । तथा एक एक सिद्ध जीवके उत्कृष्टसे कुछ कम एक एक पूर्वकोटि कालमात्र प्रत्येकशरीरस्थान प्राप्त होते है, क्योंकि, केवलीका विहार काल कुछ कम एक पूर्वकोटि मात्र ही उपलब्ध होता है । इसलिए पश्यमान कालमें वर्गणायें सान्तर ही होती है, ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए । परन्तु सेचीयकी अपेक्षा सब स्थान निरन्तर होते हैं, क्योंकि, यह स्थान ही जीवसहित होता है और ये स्थान जीवसहित नहीं होते है ऐसा कोई

❀ ता० प्रतौ '-मेत्ताणमवट्ठाणाणं ' इति पाठः । ✿ ता० प्रतौ ' जदि पुव्वकोडिमेत्ताणि ' इति पाठः ।

भावादो । अभवसिद्धियपाओग्गाओ जाओ पुढवियादिचत्तारिकाएसु लब्भमाणाओ ताओ वट्टमाणकाले सांतराओ । कुदो? वट्टमाणकाले पत्तेयसरीरवग्गणाओ उक्कस्सेण असंखेज्जलोगमेत्तीओ चेव होंति त्ति णियमादो। विग्गहगदीए वट्टमाणा अणंता जीवा पत्तेयसरीरवग्गणाए अंतो णिवदंति त्ति पत्तेयसरीरवग्गणा✲ अणंता त्ति किण्ण घेप्पदे? ण; णिगोदणामकम्मोदएण बादरणिगोदत्तं सुहुमणिगोदत्तं च पत्ताणं पत्तेयसरीरवग्गणत्तविरोहादो । विग्गहगदीए वट्टमाणाणं अणुदिण्णपत्तेयसरीरणामकम्माणं कथं पत्तेयसरीरत्तमिदि चे? ण एस दोसो; पत्तेयसरीरोदयस्स तंतत्ताभावादो । भावे वा खीणकसाओ वि पत्तेयसरीरवग्गणा होज्ज✱; तदुदयसंतं पडि विसेसाभावादो । तदो बादर-सुहुमणिगोदेहि असंबद्धजीवा पत्तेयसरीवग्गणा त्ति घेतव्वा । ण च बादरसुहुमणिगोदाणं विग्गहगदीए वि विच्छिण्णेगजीवो उवलब्भदे; तत्थ वि एगबंधणबद्धअणंतजीवोलंभादो । तत्थ एगजीवे संते को दोसो चे? ण; बादर-सुहुमणिगोदवग्गणाणमाणंतियप्पसंगादो। एदं पि णत्थि; असंखेज्जलोगमेत्ताओ चेव होंति त्ति गुरूवदेसादो ।

नियम नहीं है । अभव्योंके योग्य जो पृथिवीकायिक आदि चार स्थावर कायिकोमें प्राप्त होनेवाली वर्गणायें हैं वे वर्तमानकालमें सान्तर हैं, क्योंकि, वर्तमानकालमें प्रत्येकशरीरवर्गणायें उत्कृष्टरूपसे असंख्यात लोकप्रमाण ही होती हैं ऐसा नियम है ।

शंका-विग्रहगतिमें विद्यमान अनन्त जीव प्रत्येकशरीरवर्गणाके भीतर गर्भित होते हैं, इसलिए प्रत्येकशरीरवर्गणायें अनन्त होती हैं ऐसा क्यों नहीं ग्रहण करते ?

समाधान-नहीं, क्योंकि, निगोद नामकर्मके उदयसे बादर निगोद और सूक्ष्म निगोदपनेको प्राप्त हुए जीवोंके प्रत्येकशरीरवर्गणाओंके होनेमें विरोध है ।

शंका-विग्रहगतिमें विद्यमान जीवोंके प्रत्येक शरीर नामकर्मका उदय न होने पर प्रत्येकशरीर कैसे हो सकते हैं ?

समाधान-यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, प्रत्येकशरीरके उदयकी अधीनताका अभाव है । यदि उदयकी अधीनता मानी जाय तो क्षीणकषाय भी प्रत्येकशरीरवर्गणा हो जावे, क्योंकि, उसके उदय और सत्त्वके प्रति वहां कोई विशेषता नहीं है । इसलिए बादर निगोद और सूक्ष्मनिगोदोंसे असम्बद्ध जीव प्रत्येकशरीरवर्गणा होते हैं ऐसा यहां ग्रहण करना चाहिए । यदि कहा जाय कि विग्रहगतिमें भी बादरनिगोद और सूक्ष्मनिगोदका स्वतंत्ररूपसे एक जीव पाया जाता है सो यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि वहां पर भी एक बन्धनमें बंधे हुए अनन्त जीव पाये जाते हैं ।

शंका-वहां एक जीवके रहनेमें क्या दोष है?

समाधान-नही, क्योंकि, ऐसा मानने पर बादरनिगोद और सूक्ष्मनिगोदवर्गणाओंको अनन्तपनेका प्रसंग आता है । किन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि, वे असंख्यात लोकप्रमाण ही होती हैं ऐसा गुरुका उपदेश है ।

✲ ता० प्रतौ ' जीवा पत्तेयसरीरवग्गणा' इति पाठः । ✱ अ० प्रतौ 'पत्तेयसरीरवग्गण होज्ज' इति पाठः ।

ण च असंखेज्जलोगमेत्तपत्तेयसरीरवग्गणाहि सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तट्ठाणाणि वट्टमाणकाले आवूरिज्जंति; विरोहादो। अदीदकाले वि सांतराणि चेव; अदीदकालादो असंखेज्जगुणेहि अदीदकालुप्पण्णपत्तेयसरीरट्ठाणेहि जीवेहि सव्वट्ठाणावूरणविरोहादो। पस्समाणाए वि ण णिरंतराओ; सव्वदा अदीदकालस्स सव्वजीवरासीदो अणंतगुणहीणत्तुवलंभादो। सेचीयादो पुण सव्ववग्गणाओ णिरंतराओ; एसा चेव संभवदि त्ति णियमाभावादो।

बादरणिगोदवग्गणाओ भवसिद्धियपाओग्गाओ जाओ खीणकसायकालम्हि लब्भमाणियाओ ताओ वट्टमाणकाले सांतराओ; सव्वजीवेहि✿ अणंतगुणमेत्तबादरणिगोदवग्गणाणं खीणकसायपाओग्गाणं संखेज्जेहि जीवेहि आवूरणविरोहादो। अदीदकाले फुसणेण सांतराओ; अंतोमुहुत्तगुणिदसिद्धरासिमेत्तट्ठाणाणं चेव तीदे काले फोसणुवलंभादो। एवं पस्समाणफोसणं पि वत्तव्वं; विसेसाभावादो। सेचीयादो पुण णिरंतराओ। अभवसिद्धियपाओग्गाओ❋ जाओ मूलयथूहल्लयादिविसयाओ बादरणिगोदवग्गणाओ ताओ वट्टमाणकाले सांतराओ। कुदो? असंखेज्जलोगमेत्तबादरणिगोदवग्गणाहि सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तसव्वट्ठाणावूरणसंभवाभावादो। अदीदे

यह कहना कि असंख्यात लोकप्रमाण प्रत्येकशरीरवर्गणायें सब जीवोंसे अनन्तगुण स्थानोंको वर्तमानकालमें पूरा करती हैं, ठीक नहीं है, क्योंकि, ऐसा होनेमें विरोध आता है। वे अतीत कालमें भी सान्तर ही हैं, क्योंकि, अतीत कालसे असंख्यातगुणे अतीत कालमें उत्पन्न हुए प्रत्येकशरीरस्थानरूप जीवोंके द्वारा सब स्थानोंके पूरा होनेमें विरोध है। दृश्यमान कालमें भी वे निरन्तर नहीं हैं, क्योंकि, सर्वदा अतीत काल सब जीवराशिसे अनन्तगुणा हीन पाया जाता है। परन्तु सेचीयकी अपेक्षा सब वर्गणायें निरन्तर है, क्योंकि, इस अपेक्षासे यही सम्भव है ऐसा कोई नियम नहीं है। अर्थात् सेचीयकी अपेक्षा कोई भी वर्गणा सदा सम्भव हो सकती है, इसलिए सब वर्गणाओंको निरन्तर कहा है।

भव्योंके योग्य जो बादरनिगोदवर्गणायें क्षीणकषायके कालमें लभ्यमान हैं वे वर्तमान कालमें सान्तर हैं, क्योंकि, सब जीवोंसे अनन्तगुणी क्षीणकषायके योग्य बादरनिगोदवर्गणाओंका संख्यात जीवोंके द्वारा पूरा करनेमें विरोध है। अतीतकालमें स्पर्शनकी अपेक्षा सान्तर है, क्योंकि, अन्तर्मुहूर्तगुणित सिद्धराशिप्रमाण स्थानोंका ही अतीत कालमें स्पर्शन उपलब्ध होता है। इसी प्रकार पश्यमान स्पर्शन भी कहना चाहिए, क्योंकि, उसमें कोई विशेषता नहीं है। सेचीयकी अपेक्षा तो निरन्तर हैं। मूली, थूवर और आर्द्रक आदिमें रहनेवाली अभव्योंके योग्य जो बादरनिगोदवर्गणायें हैं वे वर्तमान कालमें सान्तर हैं, क्योंकि, असंख्यात लोकप्रमाण बादरनिगोदवर्गणाओंके द्वारा सब जीवोंसे अनन्तगुणे सब स्थानोंका पूरा करना सम्भव नहीं है। अतीत कालमें भी बादर

✿ ता० प्रतौ 'सांतराओ. (सव्वजीवेहि आणंतगुणमेत्तबादरणिगोदवग्गणाओ भवसिद्धियपाओग्गाओ खीणकसायकालम्मि लब्भमाणियाओ ताओ वट्टमाणकाले सांतराओ) सव्वजीवेहि'। ❋ अ० का० प्रत्योः 'अभवसिद्धियपाओग्गाओ' इतिपाठः।

वि काले बादरणिगोदवग्गणट्ठाणाणि सांतराणि चेव। कुदो ? असंखेज्जलोगगुणिदअ- दीदकालमेत्ताणं चेव ट्ठाणाणं तत्थ जीवसहिदाणमुवलंभादो। ण च एवं; सरिसध- णियाणं पि वग्गणाणं संभवादो। जदि वि अदीदकालेण गुणिदसव्वजीवरासिमेत्ताणि बादरणिगोदट्ठाणाणि अदीदकाले उप्पण्णाणि होंति तो सव्वट्ठाणाणि आवूरिज्जंति✿; अदीदकालादो वि सव्वजीवरासीदो वि विस्सासुवचयाणमेगपरमाणुविसयाणमणंतगु- णत्तादो। पस्समाणाए वि सांतराओ; अदीदकालं मोत्तूण एत्थ सांतरणिरंतरपरू- वणाए भविस्सकाले वि संववहाराभावादो। भावे वा तस्स अदीदकाले अंतब्भावो होज्ज; अण्णहा जीवसहिदत्ताणुववत्तीदो। ण च एगजीवेण एगा बादरणिगोदवग्गणा णिप्पज्जदि जेण सव्वबादरणिगोदेहि सव्वट्ठाणाणि तीदाणागदकालेसु आवूरिज्जंति; जहण्णियाए बादरनिगोदवग्गणाए उक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणादो हेट्ठा पादप्पसंगादो। सेचीयादो पुण सव्वट्ठाणाणि णिरंतराणि।

सुहुमणिगोदवग्गणाओ वट्टमाणकाले सांतराओ; असखेज्जलोगमेत्तसुहुमणिगोदव- ग्गणाणं सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तसेचीयट्ठाणावूरणसत्तीए अभावादो। अदीदकाले वि सेचीयट्ठाणाणि सांतराणि चेव; असंखेज्जलोगगुणिदअदीदकालमेत्तसुहुमणिगोदट्ठाणेहि अदीदकालुप्पण्णेहि सव्वट्ठाणावूरणविरोहादो। भविस्सकाले वि सांतराणि

निगोदवर्गणास्थान सान्तर ही है, क्योंकि, असंख्यात लोकगुणित अतीत कालप्रमाण स्थान ही अतीत कालमें जीवों सहित उपलब्ध होते हैं। परन्तु ऐसा नहीं है, क्योंकि, सदृश धनवाली भी वर्गणायें सम्भव हैं। यद्यपि अतीत कालसे गुणित सब जीवराशिप्रमाण बादरनिगोद स्थान अतीत कालमें उत्पन्न होते हैं तो भी सब स्थान व्याप्त कर लिये जाते हैं, क्योंकि, अतीत कालसे भी और सब जीवराशिसे भी एक परमाणुविषयक विस्रसोपचय अनन्तगुणे होते हैं। पश्यमान कालमें भी सान्तर हैं, क्योंकि, अतीत कालको छोड़कर यहां पर सान्तरनिरन्तर प्ररूपणाका भविष्य कालमें भी व्यवहार नहीं होता। यदि होता है तो उसका अतीत कालमें अन्तर्भाव हो जाता है, अन्यथा वे स्थान जीव रहित नहीं बन सकते। और एक जीवके द्वारा एक बादरनिगोदवर्गणा नहीं उत्पन्न होती है जिससे सब बादर निगोदोंके द्वारा सब स्थान अतीत और अनागत कालमें व्याप्त किये जावें, क्योंकि, ऐसा मानने पर जघन्य बादरनिगोदवर्गणाके उत्कृष्ट प्रत्येकशरीरवर्गणासे नीचे होनेका प्रसंग आता है। परन्तु सेचीयकी अपेक्षा सब स्थान निरन्तर हैं।

सूक्ष्मनिगोदवर्गणायें वर्तमान कालमें सान्तर हैं, क्योंकि, असंख्यात लोकप्रमाण सूक्ष्मनिगोदवर्गणाओंमें सब जीवोंसे अन्तगुणे सेचीयस्थानोंके पूरा करनेकी शक्तिका अभाव है। अतीत कालमें भी सेचीयस्थान सान्तर ही हैं, क्योंकि, अतीत कालमें उत्पन्न हुए असंख्यात लोकगुणित अतीतकालप्रमाण सूक्ष्मनिगोदस्थानोंके द्वारा सब स्थानोंके पूरा करनेमें विरोध है। बादरनिगोदवर्गणाके प्रसंगसे जो क्रम कह आये हैं उसी क्रमसे ये भविष्य कालमें भी सान्तर

✿ आ० प्रतौ 'सव्वट्ठाणाणमावूरिज्जंति' इति पाठः।

बादरणिगोदवग्गणाए भणिदकमेण। अथवा भविस्सकाले ण तेसिं जीवसहिदत्तमत्थि। भावे वा ण सो✱ भविस्सकालो; वट्टमाणादीदकालेसु तस्संतब्भावादो। सेचीयादो पुण णिरंतराणि।

महाखंधदव्ववग्गणा सांतरा; वट्टमाणकाले एयत्तादो। ण च सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तमहाखंधट्ठाणाणि एक्कवग्गणाए आवूरिज्जंति; विरोहादो। अदीदे वि काले महाखंधसेचीयट्ठाणाणि सांतराणि चेव; अदीदकालमेत्ताणमुक्कस्सेण भूदकालसमुप्पण्णट्ठाणाणं सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तसेचीयट्ठाणावूरणसत्तीए अभावादो। भविस्सकाले वि सांतराणि चेव। सेचीयादो पुण णिरंतराणि। णाणासेडीए वि एवं चेव सांतरणिरंतरपरूवणा कायव्वा; विसेसाहियाभावादो। एवं सांतरणिरंतराणुगमो त्ति समत्तमणुयोगद्दारं।

एगसेडिवग्गणाए ओजजुम्माणुगमं वत्तइस्सामो। तं जहा–ओजो दुविहो–कलिओजो तेजोजो चेदि। जुम्मं दुविहं–कदजुम्मं बादरजुम्मं चेदि। जं चदुहि अवहिरिज्जमाणमेगं एदि सो कलिओजो✿। चदुहि अवहिरिज्जमाणे जत्थ तिण्णि एंति सो तेजोजो। जत्थ चत्तारि एंति तं कदजुम्मं। जत्थ दो एंति तं बादरजुम्मं। एदेण अट्ठपदेण परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा कलिओजो, एगत्तादो। संखेज्जपदेसियदव्ववग्गणा

हैं। अथवा भविष्यकालमें जीवसहित नहीं हैं। यदि भविष्यकालमें भी उन्हें जीव सहित माना जाता है तो वह भविष्यकाल नहीं है, क्योंकि, उसका वर्तमान और अतीतकालमें अन्तर्भाव हो जाता है। परन्तु सेचीयकी अपेक्षा निरन्तर हैं।

महास्कन्धद्रव्यवर्गणा सान्तर है, क्योंकि, वर्तमानकालमें वह एक है। एक वर्गणाके द्वारा सब जीवोंसे अनन्तगुणे महास्कन्धस्थान पूरे जाते हैं यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, ऐसा माननेमें विरोध आता है। अतीतकालमें भी महास्कन्ध सेचीयस्थान सान्तर ही हैं, क्योंकि, उत्कृष्टसे भूतकालमें उत्पन्न हुए अतीत काल मात्र स्थानोंके द्वारा सब जीवोंसे अनन्तगुणे सेचीय स्थानोंके पूरे करनेकी शक्तिका अभाव है। भविष्यकालमें भी सान्तर ही हैं। परन्तु सेचीयकी अपेक्षा निरन्तर हैं। नानाश्रेणिकी अपेक्षा भी इसी प्रकार सान्तरनिरन्तरप्ररूपणा करनी चाहिए, क्योंकि, उससे इसमें कोई विशेषता नहीं है।

इस प्रकार सान्तर-निरन्तरानुगम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

अब एकश्रेणिवर्गणाकी अपेक्षा ओज-युग्मानुगमको बतलाते हैं। यथा–ओज दो प्रकारका है–कलि ओज और तेजोज। युग्म दो प्रकारका है–कृतयुग्म और बादरयुग्म। चारका भाग देने पर जिसमें एक शेष रहता है वह कलिओज है। चारका भाग देने पर जहां तीन शेष रहते हैं वह तेजोज है। जहां चार आते हैं वह कृतयुग्म है और जहां दो आते हैं वह बादरयुग्म है। इस अर्थपदके अनुसार परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा कलिओज है, क्योंकि, इस वर्गणाका प्रमाण एक है। जघन्य संख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणा बादरयुग्म है, क्योंकि, इस वर्गणाका

✱ ता० प्रतौ 'णत्थि सो' इति पाठः। ✿ ता० प्रतौ '–मेगं एदिस्से काले (एदि सो कलि) ओजो' अ० प्रतौ '–मेगं रादि सो कलिओजो' इति पाठः।

जहण्णिया बादरजुम्मं; दुसंखत्तादो। उक्कस्सिया तेजोजो; रूवूणकदजुम्मपमाणत्तादो। संखेज्जपदेसियदव्ववग्गणसलागाओ बादरजुम्मं; दुरूवूणकदजुम्मपमाणत्तादो वग्गणाओ पुण चउट्ठाणपदिदाओ। असंखेज्जपदेसियदव्ववग्गणाओ जहण्णिया कदजुम्मं जहण्णपरित्तासंखेज्जपमाणत्तादो। उक्कस्सिया तेजोजो; रूवूणकदजुम्मपमाणत्तादो। असंखेज्जपदेसियवग्गणसलागाओ कदजुम्मं; जहण्णपरित्तासंखेज्जेण ऊणजहण्णपरित्ताणंतपमाणत्तादो। वग्गणाओ पुण चउट्ठाणपदिदाओ। एवं सव्वाओ वग्गणाओ णेदव्वाओ। णवरि महाखंधदव्ववग्गणा जहण्णिया कदजुम्मं। उक्कस्सिया वि कदजुम्मं। महाखंधवग्गणसलागाओ कलिओजो वग्गणाओ पुण चउट्ठाणपदिदाओ।

णाणासेडिओजजुम्माणुगमेण परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा किमोजो किं जुम्मं? जहण्णिया कदजुम्मं। उक्कस्सिया वि कदजुम्मं। कुदो? एदं णव्वदे? आइरियपरंपरागदसुत्ताविरुद्धगुरूवदेसादो। अजहण्णअणुक्कस्सियाए चत्तारि वियप्पा। एवं णेयव्वं जाव धुवखंधदव्ववग्गणे त्ति। उवरिमसेसवग्गणासु जहण्णिया कलिओजो; एगत्तादो। उक्कस्सिया तेजोजो। मज्झिमाए चत्तारि वियप्पा। णवरि महाखंधदव्ववग्गणाए णाणासेडी णत्थि; सव्वकालं सरिसधणियबहुवग्गणाभावादो। एवं ओजजुम्माणुगमो त्ति समत्तमणुयोगद्दारं।

प्रमाण दो है। उत्कृष्ट संख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणा तेजोज है, क्योंकि, वह एक कम कृतयुग्मप्रमाण है। संख्यातप्रदेशी सब वर्गणाशलकायें बादरयुग्म है, क्योंकि, वे दो कम कृतयुग्मप्रमाण हैं। परन्तु वर्गणायें चतुःस्थानपतित हैं। जघन्य असंख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणा कृतयुग्म है, क्योंकि, वह जघन्य परीतासंख्यातप्रमाण है। उत्कृष्ट असंख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणा तेजोज है, क्योंकि, वह एक कम कृतयुग्मप्रमाण है। असंख्यातप्रदेशी वर्गणाशलाकायें कृतयुग्म है, क्योंकि, वे जघन्य परीतसंख्यात कम जघन्य परीतानन्तप्रमाण हैं। परन्तु वर्गणायें चतुःस्थानपतित हैं। इसी प्रकार सब वर्गणाओंके विषयमें जानना चाहिए। इतनी विशषता हैं कि जघन्य महास्कन्धद्रव्यवर्गणा कृतयुग्म है तथा उत्कृष्ट महास्कन्धद्रव्यवर्गणा भी कृतयुग्म है महास्कन्धवर्गणाशलाकायें कलिओजरूप हैं। परन्तु वर्गणायें चतुःस्थानपतित हैं।

नानाश्रेणिओजयुग्मानुगमकी अपेक्षा परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा क्या ओजरूप है या क्या युग्मरूप है? जघन्य कृतयुग्मरूप है तथा उत्कृष्ट भी कृतयुग्मरूप है।

शंका-यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान-अचार्य परम्परासे हुए सूत्राविरुद्ध गुरुके उपदेशसे जाना जाता है।

अजघन्य-अनुत्कृष्ट वर्गणाके चार भेद हैं। इस प्रकार ध्रुवस्कन्धद्रव्यगणा तक जानना चाहिए। उपरिम शेष वर्गणाओंमें जघन्य वर्गणा कलिओजरूप है, क्योंकि, वह एक है। उत्कृष्ट वर्गणा तेजोजरूप हैं और मध्यकी वर्गणायें चारों प्रकारकी हैं। इतनी विशेषता है कि महास्कन्धद्रव्यवर्गणाकी नानाश्रेणि नहीं है, क्योंकि, सर्वदा सदृश धनवाली बहुत वर्गणाओंका अभाव है।

इसप्रकार ओजयुग्मानुमम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

एगसेडिवग्गणखेत्ताणुगमेण परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा संखेज्जपदेसियदव्ववग्गणाओ च केवडि खेत्ते? लोगस्स असंखेज्जदिभागे। असंखेज्जपदेसियदव्ववग्गणप्पहुडि जाव सुहुमणिगोदवग्गणे त्ति ताव एदासिं वग्गणाणमेया सेडी केवडि खेत्ते? सव्वलोगे। जले वा थले वा आगासे वा सुहुमणिगोदवग्गणादिसव्ववग्गणाओ संभवंति त्ति तेसिं सव्वलोगो होदु णाम ण पत्तेयसरीरबादरणिगोदवग्गणाणं; तेसिं अट्ठ पुढवीयो भवणविमाणाणि च अस्सिदूण चेव अवट्ठाणादो? ण, सुहुमपुढविआउतेउवाउकाइयाणं पत्तेयसरीराणं सव्वलोगम्हि अवट्ठाणं पडि विरोहाभावादो मारणंतियपदेण उववादेण सव्वलोगमेत्तखेत्तुवलंभादो च। महाखंधदव्ववग्गणा केवडि खेत्ते? लोगे देसूणे।

णाणासेडिखेत्ताणुगमेण परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा केवडि खेत्ते? सव्वलोगे। कुदो? आणंतियादो। एवं णेयव्वं जाव सांतरणिरंतरवग्गणे त्ति। पत्तेयसरीरबादरसुहुमवग्गणाओ केवडि खेत्ते? सव्वलोगे; असखेज्जलोगपमाणत्तादो। महाखंधदव्ववग्गणा केवडि खेत्ते? लोगे देसूणं। एवं खेत्ताणुगमो त्ति समत्तमणुओगद्दारं।

एगसेडिवग्गणफोसणाणुगमेण परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणाए संखेज्जपदेसियदव्व-

---

एकश्रेणिवर्गणाक्षेत्रानुगमकी अपेक्षा परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणाओं और संख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणाओंका कितना क्षेत्र है? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है। असंख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणासे लेकर सूक्ष्मनिगोदवर्गणा तक इन वर्गणाओंकी एक श्रेणिका कितना क्षेत्र है? सब लोक क्षेत्र है।

शंका–जलमें, स्थलमें और आकाशमें सूक्ष्मनिगोदवर्गणा आदि सब वर्गणायें सम्भव हैं इसलिए उनका सब लोकप्रमाण क्षेत्र होओ, परन्तु प्रत्येकशरीरबादरनिगोदबर्गणाओंका सब लोकप्रमाण क्षेत्र नहीं हो सकता, क्योंकि, वे आठ पृथिवियों और भवनविमानोंका आश्रय लेकर ही अवस्थित हैं?

समाधान–नहीं, क्योंकि, एक तो प्रत्येकशरीरवाले सूक्ष्म पृथिवीकायिक, सूक्ष्म जलकायिक, सूक्ष्म अग्निकायिक और सूक्ष्म वायुकायिक जीवोंका सब लोकमें अवस्थान होनेमें कोई विरोध नहीं आता। दूसरे प्रत्येकशरीरवाले जीवोंका मारणान्तिकपद और उपपादकी अपेक्षा सब लोकप्रमाण क्षेत्र पाया जाता।

महास्कन्धद्रव्यवर्गणाका कितना क्षेत्र है? कुछ कम सब लोक क्षेत्र है।

नानाश्रेणिक्षेत्रानुगमकी अपेक्षा परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा कितना क्षेत्र है? सब लोकप्रमाण क्षेत्र है, क्योंकि, उसका प्रमाण अनन्त हैं। इसीप्रकार सान्तर-निरन्तरवर्गणा तक ले जाना चाहिए। प्रत्येकशरीर, बादर और सूक्ष्म वर्गणाओंका कितना क्षेत्र है? सब लोकप्रमाण क्षेत्र है, क्योंकि, वे असंख्यात लोकप्रमाण है। महास्कन्धद्रव्यवर्गणाका कितना क्षेत्र है? कुछ कम लोकप्रमाण है।

इस प्रकार क्षेत्रानुगम अनुयोगद्वारा समाप्त हुआ।

एकश्रेणिवर्गणास्पर्शनानुगमकी अपेक्षा परवाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणाओं और संख्यातप्रदेशी

वग्गणाहिं च केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखेज्जदिभागो सव्वलोगो वा । असंखेज्जपदेसियदव्ववग्गणप्पहुडि जाव सुहुमणिगोदवग्गणे त्ति ताव एदासिं वग्गणाणमेगसेडीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? अदीदवट्टमाणेण सव्वलोगो । महाखंधदव्ववग्गणाए केवडियं खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणेण* लोगो देसूणो । अदीदेण सव्वलोगो । एवं णाणासेडिफोसणं परूवेयव्वं । णवरि परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणप्पहुडि जाव सुहुमणिगोदवग्गणे त्ति ताव एदाहि वग्गणाहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? सव्वलोगो । महाखंधदव्ववग्गणाए केवडियं खेत्तं फोसिदं? लोगो देसूणो सव्वलोगो वा । एवं फोसणाणुगमो त्ति समत्तमणुयोगद्दारं ।

एगसेडिकालाणुगमेण परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा केवचिरं कालादो होदि ? वग्गणादेसेण सव्वद्धा । दुपदेसियवग्गणप्पहुडि जाव धुवखंधदव्ववग्गणे त्ति ताव पत्तेयं पत्तेयं एवं चेव सव्वत्थ वत्तव्वा । अचित्तअद्धुवखंधदव्ववग्गणा केवचिरं कालादो होदि? जहण्णेण एगसमयं, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा । एवं णेयव्वं जाव महाखंधदव्ववग्गणे त्ति । पत्तेयसरीर-बादरणिगोद-सुहुमणिगोदवग्गणाणमोरालिय-तेजा-कम्मइयपरमाणुपोग्गलेहि तेसिं विस्सासुवचयपोग्गलेहि य भेदसंघादं

द्रव्यवर्गणाओंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और सब लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । असंख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणासे लेकर सूक्ष्मनिगोद द्रव्यवर्गणा तक इन वर्गणाओंकी श्रेणिने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? अतीत और वर्तमान कालमें सब लोकका स्पर्शन किया है । महास्कन्धद्रव्यवर्गणाने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमानमें कुछ कम लोकप्रमाण क्षेत्रका और अतीत कालमें सब लोकका स्पर्शन किया है । इसी प्रकार नानाश्रेणिका स्पर्शन कहना चाहिए । इतनी विशेषता है कि परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणासे लेकर सूक्ष्मनिगोदवर्गणा तक इन वर्गणाओंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? सब लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । महास्कन्धद्रव्यवर्गणाने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? कुछ कम लोकप्रमाण क्षेत्रका और सब लोकका स्पर्शन किया ।

इस प्रकार स्पर्शनानुगम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

एकश्रेणिकालानुगमकी अपेक्षा परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणाका कितना काल है? वर्गणादेशकी अपेक्षा सब काल है । द्विप्रदेशी वर्गणासे लेकर ध्रुवस्कन्धद्रव्यवर्गणा तक प्रत्येक वर्गणाका सर्वत्र इसी प्रकार काल कहना चाहिए । अचित्तध्रुवस्कन्धद्रव्यवर्गणाका कितना काल है ? जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट अनन्त काल है जो असंख्यात पुद्गलपरिवर्तनप्रमाण है । इसी प्रकार महास्कन्धद्रव्यवर्गणा तक जानना चाहिए । प्रत्येकशरीर, बादरनिगोद और सूक्ष्मनिगोद वर्गणाओंके औदारिकशरीर, तैजसशरीर और कार्मणशरीरोंके पुद्गलों द्वारा तथा उनके विस्रसोपचयों

---

* अ० का० प्रत्योः ' महाखंधदव्ववग्गणाए केवडियं खेत्तं फोसिदं, अदीदवट्टमाणेण सव्वलोगो महाखंधदव्ववग्गणाए केवडियं खेत्त फोसिदं वट्टमाणेण ' इति पाठः ।